राजस्थान का MAP (41 जिलों के अनुसार)

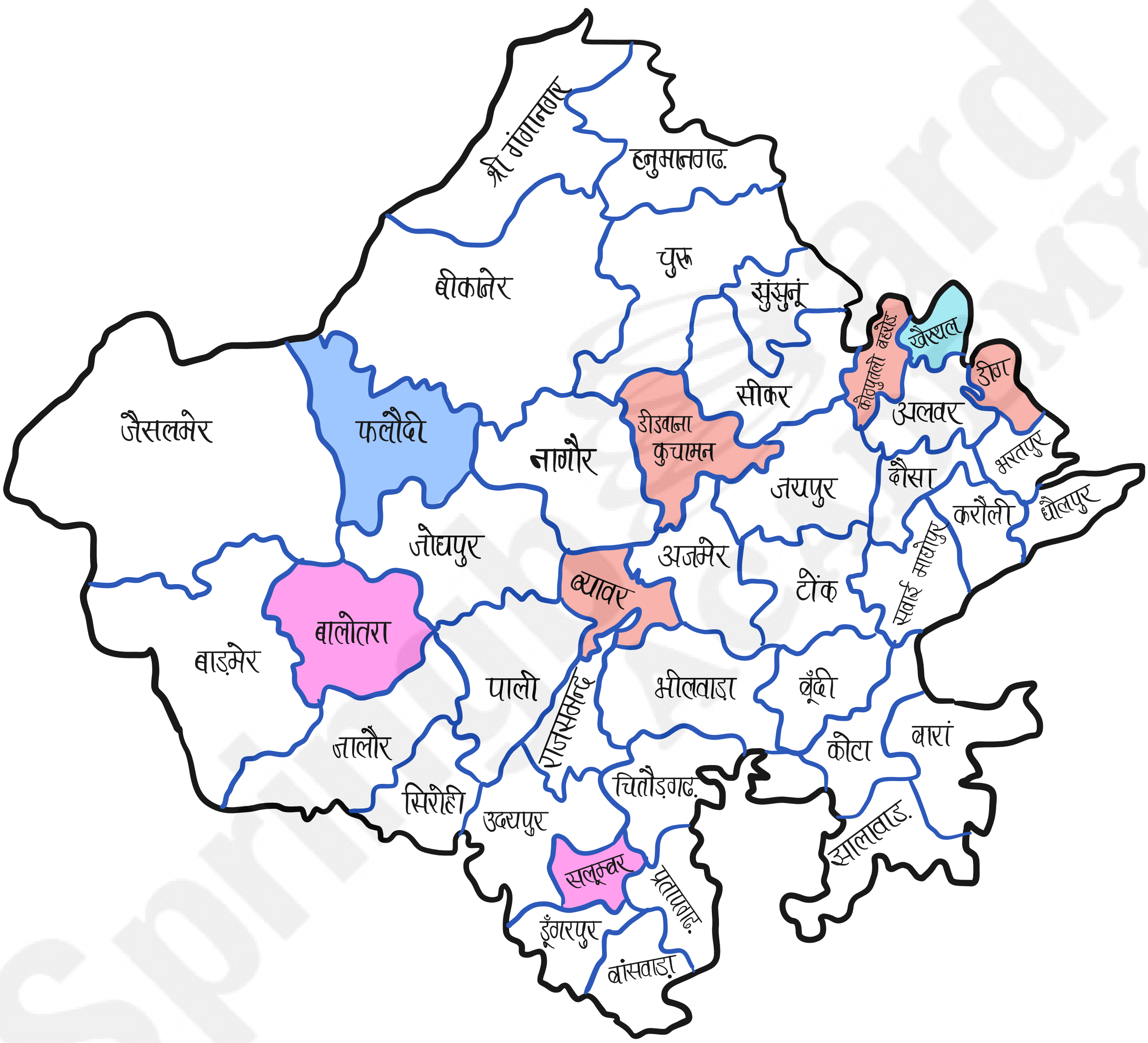

मरुस्थल का महत्व-

- पर्यटन
- नवीकरणीय ऊर्जा
- खनिज संसाधन
- परमाणु परीक्षण स्थल
- सैन्य प्रशिक्षण स्थल
- पशु सम्पदा
- जैव विविधता
- नमक उत्पादन

NOTE - बड़े उद्योग - अलवर , सर्वाधिक उद्योग - जयपुर

* नवीकरणीय ऊर्जा-

राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी भाग में नवीकरणीय ऊर्जा की सम्भावना सर्वाधिक है।
जैसे- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा

* खनिज-

राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी भाग में जीवाश्म खनिज / ऊर्जा खनिज अधिक पाए जाते है।

जैसे- पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, कोयला।

2023 — सर्वाधिक उत्पादन - बाड़मेर

* परमाणु परीक्षण स्थल-

पोकरण को भारत की परमाणु परीक्षण स्थली कहा जाता है।

* सैन्य प्रशिक्षण स्थल-

(i) चाँदन फील्ड फायरिंग रेंज (जैसलमेर)
(ii) महाजन फील्ड फायरिंग रेंज (बीकानेर)

* पशु सम्पदा-

राज. के मरुस्थलीय क्षेत्र में पशुधन अधिक पाया जाता है।
प्रमुख जिले - बाड़मेर, जोधपुर

Springboard ACADEMY

* **नमक सम्पदा**- मरुस्थल में नमक अधिक उत्पादित होता है क्योंकि यहाँ खारे पानी की झीलें अधिक पायी जाती है।

Ex. साम्भर, पचपदरा (सर्वाधिक गुणवत्ता वाला नमक) डीडवाना।

* **पर्यटन**- पश्चिमी राजस्थान की संस्कृति पर्यटन को आकर्षित करती है।

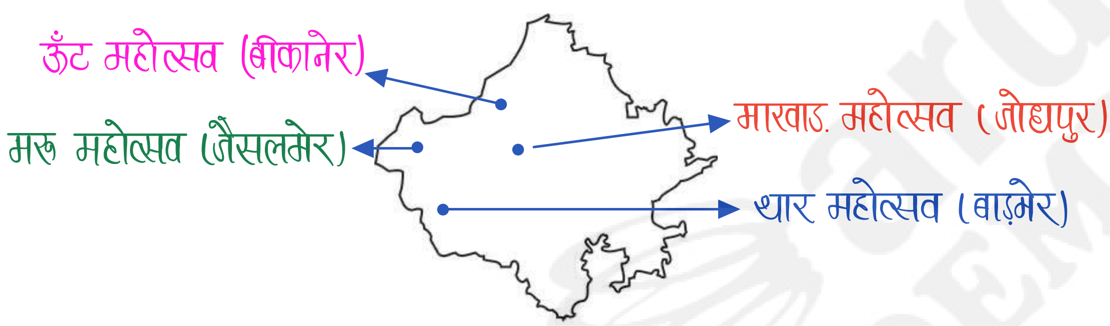

* **जैव विविधता**-

विश्व के अन्य मरुस्थलों की तुलना में थार मरुस्थल में अधिक जैव विविधता पाई जाती है।

* **खाद्यान्न उत्पादन**-

राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी भाग में मोटा अनाज अधिक उत्पादित होता है। Ex. बाजरा

Springboard Academy

अरावली

अरावली का महत्व- (50 words)

1. मरुस्थलीकरण- अरावली एक अवरोधक के रूप में मरुस्थलीकरण को रोकती है।

2. जैव विविधता- अरावली में जैव विविधता अधिक पाई जाती है क्योंकि यहाँ वनस्पति विस्तार अधिक है।

3. जनजातीय संरक्षण- राजस्थान की अधिकांश जनजातियाँ अरावली में पाई जाती है इस कारण अरावली को जनजातियों की शरणस्थली कहा जाता है।

प्रमुख जनजातियाँ- मीणा (जयपुर)
भील (उदयपुर)
गरासिया (सिरोही)

4. खनिज- अरावली क्षेत्र में धात्विक खनिज अधिक पाए जाते है क्योंकि अरावली का निर्माण धारवाड़ चट्टानों से हुआ है।

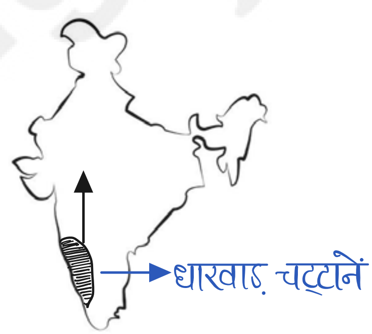

(v) अपवाह तंत्र एवं नदियाँ- राजस्थान की अधिकांश नदियों का उद्गम अरावली से होता है।

(vi) जल विभाजक रेखा- अरावली को राजस्थान की जल विभाजक रेखा

कहा जाता है क्योंकि यह राजस्थान के अपवाह तंत्र को दो भागों में बाँटती है।

अरब सागर अपवाह तंत्र

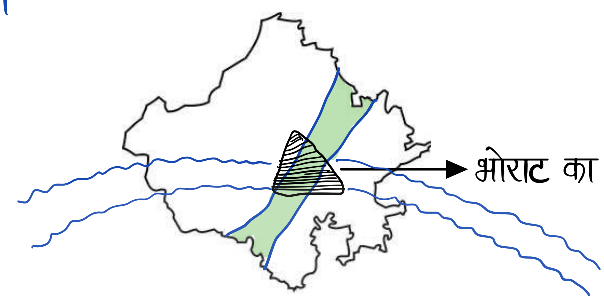

बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र

(vii) झील→ राजस्थान की अधिकांश झीलें (मीठे पानी) अरावली क्षेत्र (उदयपुर) में पायी जाती है।

(viii) पर्यटन→ अरावली पर्यटन को आकर्षित करती है, क्योंकि प्रसिद्ध धार्मिक स्थल (अजमेर-पुष्कर) तथा हिल स्टेशन (माउन्ट आबू) अरावली में स्थित है

(IX) सभ्यता→ अरावली को प्राचीन सभ्यता (आहड़, गिलुण्ड, बैराठ, गणेश्वर) एवं नवीन नगरीय सभ्यताओं (जयपुर, अजमेर, उदयपुर) की जन्म स्थली कहा जाता है।

(X) योजना प्रदेश→ अरावली पर्वत माला को राजस्थान का योजना प्रदेश कहा जाता है। क्योंकि अरावली प्रदेश में सरकार की अनेक योजनाएँ व बजट लागू होती हैं। जैसे- सभ्यता का संरक्षण, पर्यटन का विकास।

* राजस्थान एवं अरावली की प्रमुख पहाड़ियाँ-

Trick-

(i) भाकर - सिरोही

(ii) पहाड़ी का नाम + भाकर → जालौर

(iii) पहाड़ी का नाम + मगरा → उदयपुर, राजसमन्द

(iv) पहाड़ी का नाम + डूँगर, डूँगरी → जयपुर, कोटपुतली बहरोड़

पहाड़ी / पर्वत	स्थिति
• त्रिकूट पहाड़ी (सोनार दुर्ग)	जैसलमेर
• त्रिकूट पर्वत (कैलादेवी मन्दिर)	करौली
• चिड़ियाटूक (मेहरानगढ़ दुर्ग)	जोधपुर
छप्पन पहाड़ियाँ / गोलाकार पहाड़ियाँ (सिवाणा)	बालोतरा, बाड़मेर
• रोजा भाकर, ईसराना भाकर, झारोला भाकर	जालौर
• सुंधामाता - 1st Rope Way 2006 में ↳ भालू संरक्षित क्षेत्र	जालौर
• जसवन्तपुरा हिल्स (इसकी सबसे ऊँची चोटी) ↓ डोरा पर्वत - 869 मीटर	जालौर

NOTE- जालौर एवं बाड़मेर की पहाड़ियों में मुख्यतः ग्रेनाइट एवं रायोलाइट चट्टानें पाई जाती है।

सिरोही-

1. भाकर- दक्षिणी अरावली में छोटी, तीव्र ढाल एवं उत्खात (Bad band) पहाड़ियों को भाकर कहा जाता है।

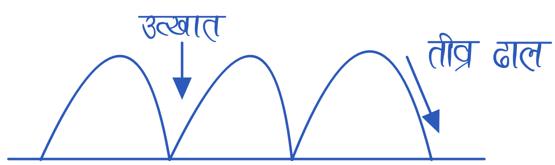

• बेल का मगरा- (सिरोही)
  ↳ इसमें वॉलेस्टोनाइट खनिज का भंडारण पाया जाता है।

➤ राजसमंद – रेल का मगरा

➤ उदयपुर – 1. हिरण मगरी
2. माछला मगरा ⟶ 2nd Rope way- 2008 में
   ▸ पिछोला झील / दूध तलाई के निकट स्थित है।
   ▸ मनसा पूर्ण करणी माता मन्दिर
3. मोती मगरी – फतेह सागर झील के निकट
4. जरगा पहाड़ी
5. रागा पहाड़ी

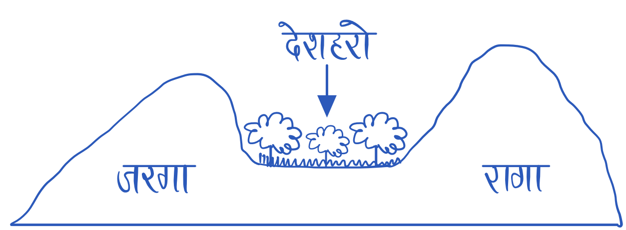

➤ उदयपुर में जरगा व रागा पहाड़ियों के बीच स्थित हरियाली वाला क्षेत्र देशहरों कहलाता है।

6. गोगुन्दा हिल्स- आयड़ / बेड़च नदियों का उद्गम स्थल।

Springboard ACADEMY

7. बीछामेड़ा हिल्स– सोम नदी का उद्गम

* राजसमन्द–

(i) बिजराल – खारी
(ii) दिवेर – कोठारी
→ बनास की सहायक नदी

(iii) खमनौर हिल्स – बनास नदी का उद्गम

* पाली–

(i) काला-भूरा डूँगर → लूनी बेसिन की पूर्वी सीमा पर स्थित है।

* ब्यावर- टॉडगढ़ पहाड़ी – 934 मी.

* अजमेर–

(i) तारागढ़ पहाड़ी - 873

(ii) नाग पहाड़ी - 795 मी.
→ सर्पिलाकार होने के कारण
→ लूनी नदी का उद्गम

* जयपुर–

(i) मोती डूँगरी – गणेश मन्दिर

(ii) झालाना डूँगरी

(iii) ईगल हिल्स (चील पहाड़ी) → जयगढ़ किला स्थित है।

(iv) बाबाई- जयपुर

* कोटपुतली बहरोड़–

(i) महादेव डूँगरी
(ii) गणेश डूँगरी
(iii) भीम डूँगरी
(iv) बीजक की पहाड़ी
– बैराठ सभ्यता से सम्बन्धित → (विराटनगर)

Springboard ACADEMY

- बैराठ हिल्स – बाणगंगा का उद्गम – (कोटपुतली- बहरोड़)
- सेवर हिल्स – साबी नदी का उद्गम
- मनोहरपुरा हिल्स – मेंथा / मेंढा का उद्गम

(ऊपर की दोनों पंक्तियाँ → जयपुर)

- बरवाड़ा हिल्स – जयपुर

*** सवाई माधोपुर**

(i) चौथ का बरवाड़ा – चौथ माता का मन्दिर
सीसा - जस्ता के भण्डारण

*** झुंझुनू →** बबाई हिल्स

*** सीकर →**

(i) मालकेत / मालखेत पहाड़ी
(ii) खंडेला हिल्स – कांतली नदी का उद्गम
रोहिला क्षेत्र → यूरेनियम का भण्डारण
(iii) काजल हिल्स – जीणमाता मन्दिर → 6th रोप-वे
(iv) हर्ष पर्वत – हर्षनाथ मन्दिर

*** अलवर –**

- हर्षनाथ पहाड़ी
- उदयनाथ पहाड़ी – रूपारेल नदी का उद्गम
- भैंराच पर्वत
- भानगढ़ हिल्स
- सिरावास हिल्स

*** बूँदी**

- आड़ावाला / आरावाला पहाड़ी

Springboard ACADEMY

* भीलवाड़ा–

- बीजासण हिल्स

NOTE- बीजासण माता मन्दिर इन्द्रगढ़ (बूँदी) में है।

राजस्थान की विशेष आकार की पहाड़ियाँ–

(i) 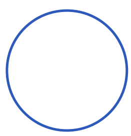 गोलाकार/ छप्पन की पहाड़ियाँ → बाड़मेर

(ii) 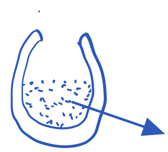 घोड़े की नाल → बाराँ (हाड़ौती)

जल भरा हुआ – रामगढ़ क्रेटर झील

(iii) दोहरी तस्तरीनुमा पहाड़ियाँ – गिरवा

पर्वतों की श्रृंखला को

(iv) अर्द्धचन्द्राकार – बूँदी हिल्स एवं मुकुन्दरा हिल्स– कोटा, झालावाड़

(v) सर्पिलाकार (नाग हिल्स) - अजमेर

Q. पूर्वी मैदान का महत्व– (50 words)

(1.) कृषि उत्पादकता–

पूर्वी मैदान में कृषि उत्पादकता अधिक होती है क्योंकि यहाँ सर्वाधिक उपजाऊ मृदा (जलोढ़) पाई जाती है।

Springboard Academy

(ii) जनघनत्व– अधिक होगा, क्योंकि यह अधिक उपजाऊ मैदान है।

(iii) आधारभूत अवसंरचना–

पूर्वी मैदान में आधारभूत संरचना अधिक विकसित है, जैसे- सड़क, विद्युत, परिवहन व शिक्षा।

(iv) उद्योग-

पूर्वी मैदान अन्य भौतिक प्रदेशों की तुलना में अधिक विकसित है। जैसे- जयपुर, अलवर।

(v) पक्षी जैवविविधता–

- पूर्वी मैदान में पक्षियों की अधिक प्रजाति पायी जाती है।

Ex. बन्ध बारैठा, केवलादेव (भरतपुर)

* अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु-

- दिशाओं के अनुसार राजस्थान के मैदानी भाग–

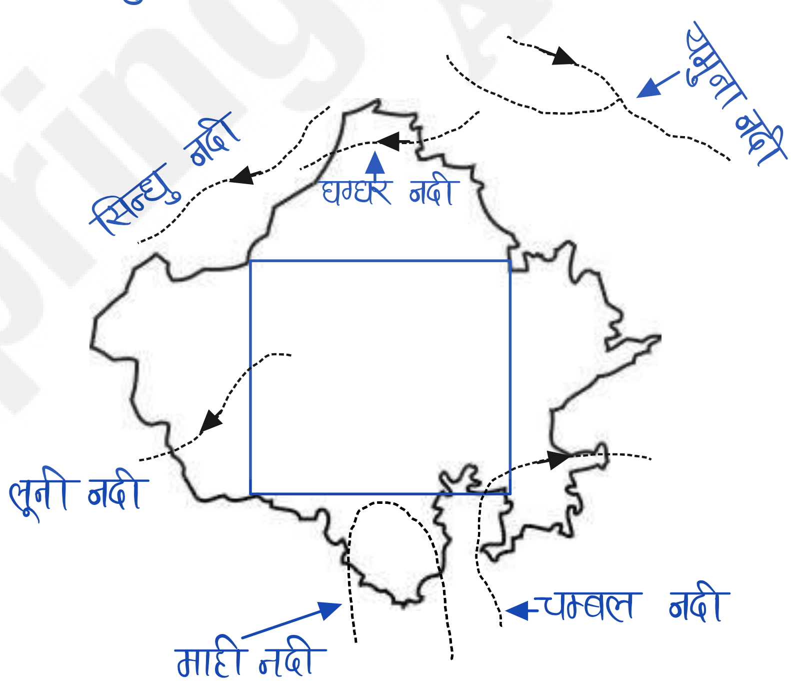

Springboard ACADEMY

हाड़ौती का महत्व-

(i) कृषि उत्पादकता- हाड़ौती क्षेत्र में कृषि उत्पादकता उच्च पाई जाती है क्योंकि यहाँ काली मिट्टी / उपजाऊ मिट्टी पाई जाती है।

(ii) जनघनत्व- जनघनत्व अधिक पाया जाता है क्योंकि यहाँ उपजाऊ मिट्टी पायी जाती है।

(iii) खनिज- हाड़ौती में मुख्यतः पत्थर वाले खनिज अधिक पाए जाते है।
जैसे- बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, रेड स्टोन (धौलपुर पत्थर)

(iv) जल उत्पादकता / सतही जल-
इस क्षेत्र में जल उत्पादकता अधिक होती है, क्योंकि इस भौतिक प्रदेश में नदियाँ अधिक पायी जाती है।

(v) जलीय जैव विविधता-

➤ हाड़ौती क्षेत्र में जलीय जैव विविधता अधिक पायी जाती है।
जैसे- घड़ियाल, मगरमच्छ, उदबिलाव, गांगेय सूस (डॉल्फिन-Gangetic Sus)
↓
(सर्वाधिक गंगा नदी में)

Springboard Academy

झीलें

- पानी की प्रकृति के आधार पर राजस्थान की झीलों को २ भागों में बाँटा जाता है–

१. खारे पानी की झीलें

- कारण- टेथिस सागर के अवशेष
- सर्वाधिक- डीडवाना-कुचामन / नागौर

२. मीठे पानी की झीलें

- कारण- वर्षा जल व नदी जल पर आधारित
- सर्वाधिक - उदयपुर

१. खारे पानी की झीलें

- राजस्थान के उ. प. में खारे पानी की झीलें अधिक पाई जाती है, क्योंकि यहाँ झीलों के नीचे माईकाशिष्ट चट्टानें पाई जाती है।

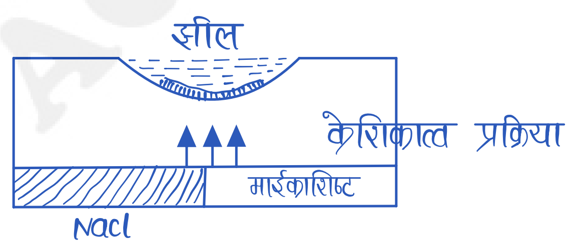

1. सांभर = जयपुर ग्रामीण
2. पचपदरा = बालोतरा
3. डीडवाना = डीडवाना कुचामन
4. कुचामन = डीडवाना कुचामन
5. नावां = डीडवाना कुचामन
6. डेगाना = नागौर

Springboard Academy

7. रैवासा = सीकर

8. कछोर = सीकर

9. तालछापर = चुरू

10. लूणकरणसर = बीकानेर

11. फलौदी = फलौदी

12. कावोद = जैसलमेर
(काणोद)

① <u>सांभर झील</u> :-

- यह जयपुर ग्रामीण में स्थित खारे पानी की झील है।
- <u>निर्माता</u> - वासुदेव चौहान
  - (बिजौलिया शिलालेख के अनुसार)
- <u>विशेषताएँ</u> -

(i) सांभर का निर्माण पाँच नदियों से मिलकर हुआ है।
- मेंथा - सर्वाधिक लवणता लाती है।
- रूपनगढ़
- खारी
- तुरतमति
- खंडेल

(ii) सांभर राजस्थान की सबसे बड़ी एवं देश की तीसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील है।

Ist = चिल्का झील (odisha)
IInd = पुलीकट (A.P & Tamilnadu)

(iii) देश में सर्वाधिक नमक उत्पादन सांभर झील से होता है-
- भारत = 8.9%
- राजस्थान = 80-90%

Springboard ACADEMY

(iv) सांभर झील संयुक्त उपक्रम द्वारा संचालित है।

सांभर
- केन्द्र सरकार — HSL (हिन्दुस्तान साल्ट लिमिटेड) → 60%
- राज्य सरकार — SSL (सांभर साल्ट लिमिटेड) → 40%

(v) <u>क्यार-</u> सांभर से उत्पादित नमक को 'क्यार' कहते हैं।

(vi) सांभर झील रामसर साईट सूची में शामिल = 1990 में (दूसरी)

जिसमें संरक्षित जीव
- कुरंजा
- राजहंस (फ्लेमिंगो)

NOTE- सर्वाधिक कुरंजा पक्षी - खींचन गाँव (फलोदी)

<u>NOTE</u>- हाल ही में (2019 में) सांभर झील कुरजा पक्षियों की मृत्यु के कारण चर्चा में थी।

कारण - एवियन बोटुलिज्म

→ सांभर झील देश में सबसे बड़ी अन्तः स्थलीय खारे पानी की झील है।

२. <u>पचपदरा झील</u>-

→ यह बालोतरा में स्थित एक खारे पानी की झील है।

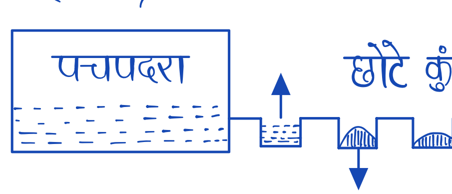

छोटे कुंड/कुएँ = कोसिया

रेस्ता (उत्पादित नमक)

Springboard Academy

विशेषताएँ-

(i) इस झील से सर्वश्रेष्ठ नमक उत्पादित होता है। क्योंकि इस झील में 98% NaCl होता है।

(ii) **खारवाल** → यह एक जाति है जो पचपदरा से नमक उत्पादन करने का कार्य करती है।

(iii) **मोरली** → यह एक झाड़ी है। जो पचपदरा में नमक उत्पादन करने में उपयोगी है।

3. डीडवाना झील-

यह डीडवाना-कुचामन में स्थित एक खारे पानी की झील है।

विशेषताएँ-

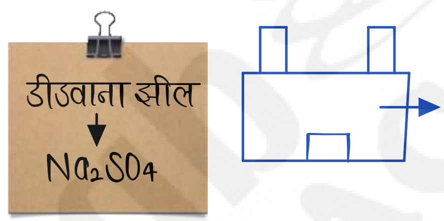

→ राजस्थान राज्य कैमिकल वर्क्स 1964

(i) इस झील से निम्न श्रेणी का नमक उत्पादन होता है, क्योंकि यहाँ पर NaCl के स्थान पर सोडियम सल्फेट पाया जाता है।

(ii) इस झील के निकट 'Rajasthan State Chemical Works-1964' डीडवाना में स्थापित किया गया।

* **Na_2SO_4 के उपयोग-**

- काँच उद्योग
- कागज उद्योग
- चमड़ा उद्योग

Springboard ACADEMY

२. मीठे पानी की झीलें

- राजस्थान में मीठे पानी की झील सर्वाधिक अरावली (उदयपुर) में पाई जाती है।
- राजस्थान में सर्वाधिक झील उदयपुर में स्थित है।
- इस कारण उदयपुर को झीलों की नगरी कहते है।

1. जयसमन्द झील / ढेबर झील – (समन्द - अर्थ→ महासागर की तरह)

- स्थिति - सलूम्बर (ढेबर नाल)
- निर्माता - महाराणा जयसिंह
- निर्माण काल - 1685-1691 ई. में
- यह गोमती नदी पर स्थित है।

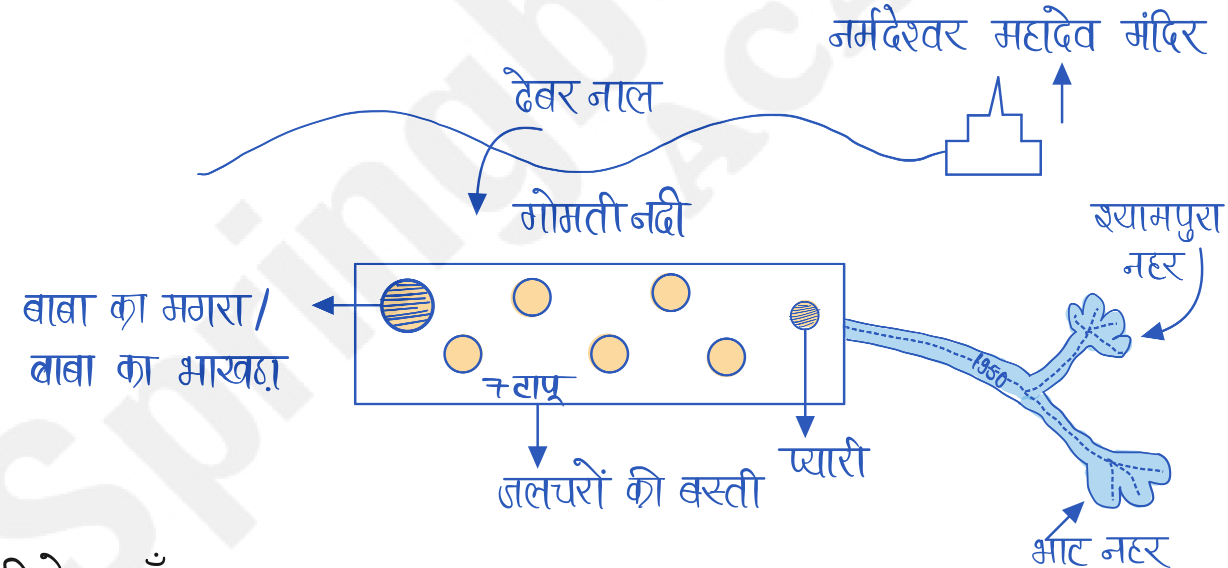

विशेषताएँ-

(i) जयसमंद झील मीठे पानी की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है।

(ii) इस झील में सर्वाधिक टापू (7) स्थित है।

सबसे बड़ा टापू → बाबा का मगरा

प्यारी ← सबसे छोटा टापू

Spinbard ACADEMY

(iii) इस झील में निवास करने वाली जनजाति भील-मीणा है।

(iv) इस झील से सिंचाई के लिए दो नहरें निकाली गई।

जिसमें

श्यामपुरा नहर | भाट नहर

(v) नर्मदेश्वर महादेव मन्दिर एवं हाथियों की प्रतिमा इस झील के निकट स्थित है।

(vi) इस झील में जलीय जैव विविधता अधिक पाई जाती है।

↳ इस कारण इस झील को 'जलचरों की बस्ती' कहा जाता है।

(vii) इस झील को '<u>ढेबर झील</u>' कहा जाता है।

२. <u>पिछोला झील</u> - उदयपुर

↳ निर्माता- बन्जारे (राणा लाखा के काल में)

↳ निर्माण काल- 1388 ई.

↳ नदी - सीसारमा, बूसड़ा

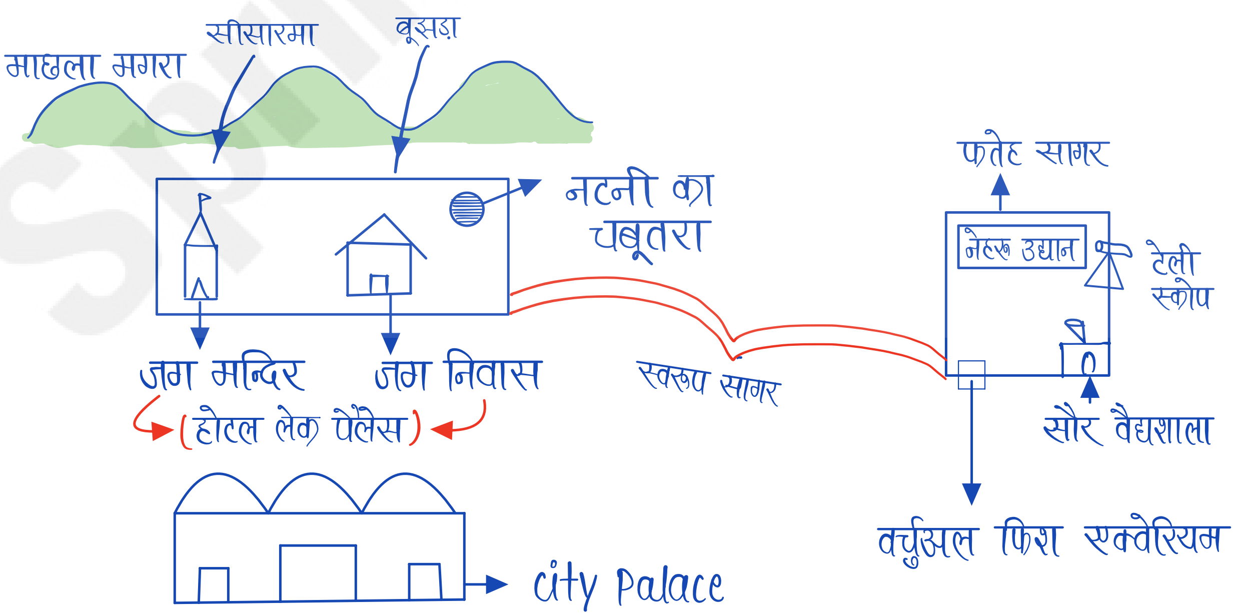

विशेषताएँ-

(i) पिछोला झील को बैलों की समृद्धि / याद में बनवाया गया।

(ii) इस झील से संबंधित ऐतिहासिक धरोहर :-

- नटनी का चबूतरा (राणा लाखा)
- • जगमन्दिर (जगतसिंह-I)
  • जगनिवास (जगतसिंह-II)
- Udaipur City Palace

(iii) जगमन्दिर एवं जगनिवास महल वर्तमान में 'होटल लेक पैलेस' के रूप में संचालित है।

(iv) राजस्थान की प्रथम सौर नाव एवं इलेक्ट्रिक नाव इस झील में संचालित की गई।

(v) पिछोला झील के अतिरिक्त जल को 'फतेह सागर' में छोड़ा जाता है।

(vi) स्वरूप सागर चैनल → पिछोला झील को फतेहसागर से जोड़ा जाता है।

(vii) शाहजहाँ ने विद्रोह के समय इसी झील में शरण ली थी।

3. फतेहसागर झील / देवाली तालाब / ड्यूक ऑफ कनॉट डैम –

→ स्थिति - उदयपुर

→ निर्माता - महाराजा जयसिंह (1688 ई.)

→ पुनः निर्माण - 1888 ई. महाराणा फतेहसिंह

→ नदी - सीसारमा
  बूसड़ा

विशेषताएँ-

(i) इस झील के मध्य नेहरू उद्यान स्थित है। जो पर्यटन को आकर्षित करता है।

Springboard Academy

(iii) सौर वैधशाला, टेलीस्कोप और वर्चुअल फिश एक्वेरियम भी इस झील के निकट स्थित है।

(iv) इस झील में पानी की कमी होने पर मदार बाँध (बेड़च नदी) से जलापूर्ति की जाती है।

4. रंग सागर / अमरकूट–

- स्थिति - उदयपुर
- निर्माणकाल - अमरसिंह बढ़वा
- नदी - सीसारमा
  बूझड़ा

विशेषताएँ–

- यह झील पिछोला एवं स्वरूप सागर से जुड़ी हुई है।

5. बड़ी झील / जाना / जियान सागर -

- स्थिति - उदयपुर (बड़ी गाँव)
- निर्माता - महाराजा राजसिंह
- निर्माण काल - 1652 - 1680 ई.

विशेषताएँ-

(i) इस झील के निकट बाहुबली पहाड़ी स्थित है।

(ii) इस झील में महासीर मछली की प्रजाति पाई जाती है।

(iii) यह झील Conservation Reserve में शामिल है।

Springboard ACADEMY

6. उदयसागर – उदयपुर (1559-64 ई.)

- निर्माता - महाराणा उदयसिंह
- नदी - बेड़च / आयड़
- आयड़ नदी इस झील में गिरने के बाद 'बेड़च' कहलाती है

7. दूधतलाई - उदयपुर
↓
पिछोला के निकट स्थित

(दूध बावड़ी - सिरोही)

8. नक्की झील (सिरोही)-

- यह एक क्रेटर झील / ज्वालामुखी झील का उदाहरण है।

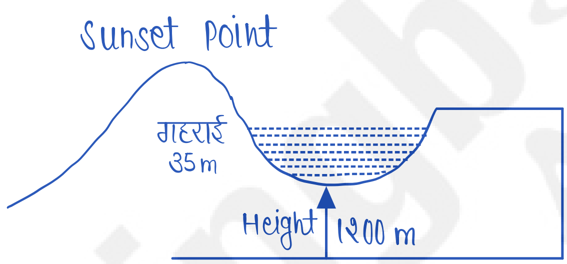

टॉड रॉक → 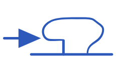

नन रॉक → 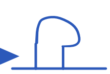

नन्दी रॉक

हॉर्न रॉक

विशेषताएँ–

→ लोक कहावतों के अनुसार इस झील का निर्माण नाखूनों से हुआ है।

- यह राजस्थान की सबसे ऊँची एवं सबसे गहरी झील है।
  ऊँची ↓ (1200 मी.) गहरी ↓ (35 मी.)
- नक्की झील राजस्थान की सबसे ठण्डी झील है।
- राजस्थान में एकमात्र हिल स्टेशन वाली झील है।

Springboard Academy

- इस झील पर Sunset Point स्थित है। जो पर्यटन को आकर्षित करता है।
- गरासिया जनजाति के द्वारा अस्थियों का विसर्जन इसी झील में किया जाता है।

९. राजसमंद झील-

- स्थिति - राजसमन्द
- निर्माता - महाराजा राजसिंह
- निर्माणकाल - १६६२-७६ ई.
- नदियाँ - गोमती, ताली, केलवा

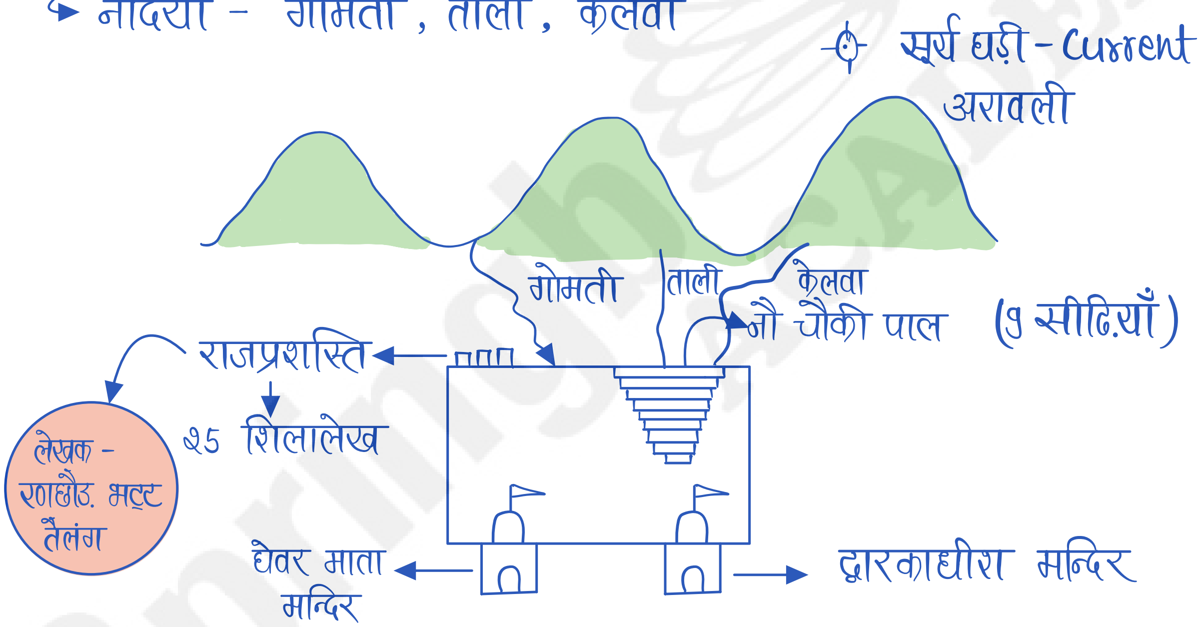

विशेषताएँ-

- राजसमंद झील राजस्थान की प्रथम अकाल राहत झील है।
- इस झील के निर्माण में सर्वाधिक लोगों (60,000) ने योगदान दिया है।
- घेवर माता मन्दिर व द्वारकाधीश मन्दिर इसी के किनारे स्थित है।

- इस झील के किनारे नौ चौकी पाल स्थित है।
- राजप्रशस्ति भी इसी झील के निकट स्थित है।

10. पुष्कर झील-

- पुष्कर झील अजमेर (पुष्कर) में स्थित है।
- जो क्रेटर या ज्वालामुखी झील का उदाहरण है।

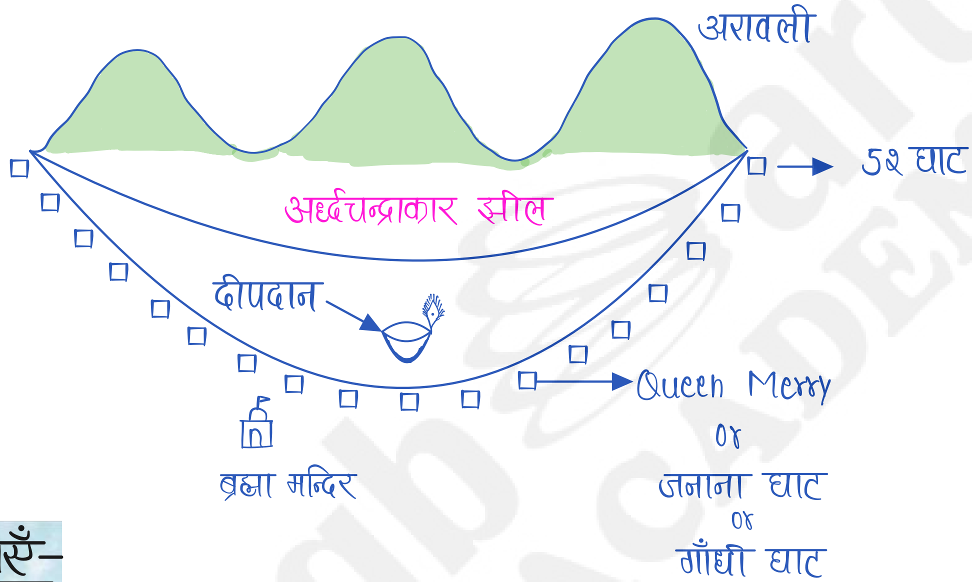

विशेषताएँ-

- उपनाम- पाँचवा तीर्थ / तीर्थराज / तीर्थों का मामा / कोंकण तीर्थ / 52 घाटा झील

- पुष्कर राजस्थान की सबसे पवित्र झील मानी जाती है।
- इस झील में अस्थियों का विसर्जन अधिक होता है।
  जैसे-
  - गाँधीजी
  - अटल बिहारी वाजपेयी
  - बाल ठाकरे
  - किरोड़ी सिंह बैंसला
- कार्तिक पूर्णिमा को इस झील के किनारे मेले का आयोजन होता है। जिसे 'राजस्थान का रंगीला मेला' कहा जाता है।

- कार्तिक पूर्णिमा को इस झील में दीपदान किया जाता है।
- झील के निकट ब्रह्मा जी का मन्दिर स्थित है।
- पुष्कर झील राजस्थान में सबसे बड़ी मीठे पानी की प्राकृतिक झील है।

11. आनासागर or अर्णोराज सागर-

- स्थिति - अजमेर शहर
- नदी - बांडी
- निर्माता - अर्णोराज चौहान
- निर्माणकाल - 1136-1137 ई.

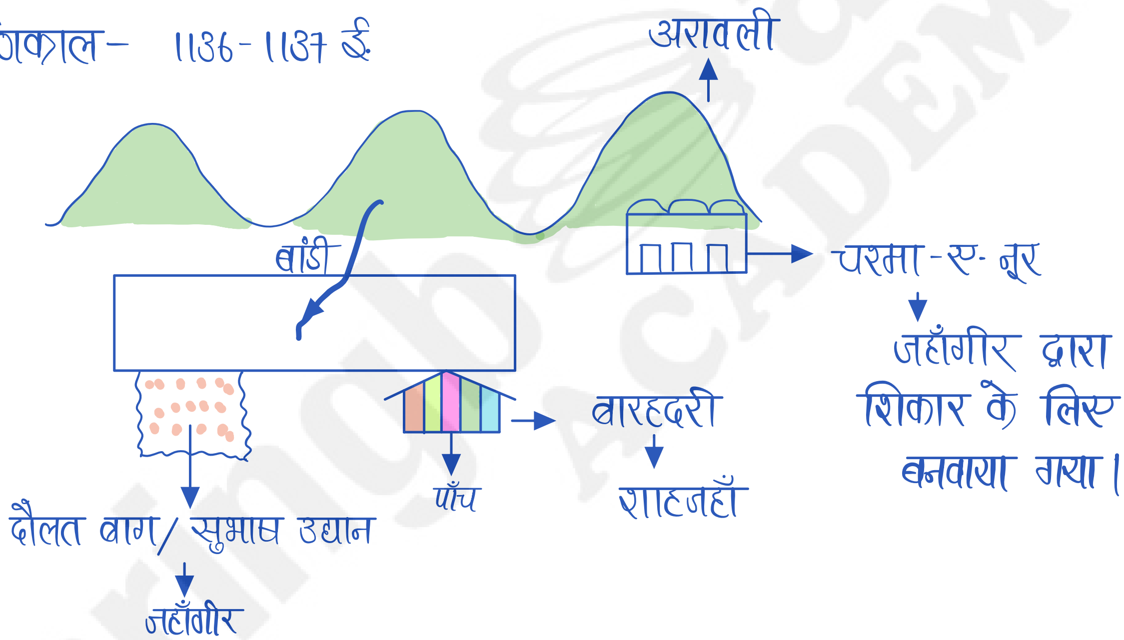

12. फॉय सागर-

- निर्माता - इंजीनियर फॉय
- निर्माण काल = 1891-92 ई.
- नदी = बांडी
- विशेषताएँ-

(i) राजस्थान की दूसरी अकाल राहत झील फॉय सागर है। (1st = राजसमंद = 1662 ई.)

Springboard ACADEMY

13. मानसागर – जयपुर सिटी

- निर्माता - मानसिंह
- निर्माण काल = 1610 ई.

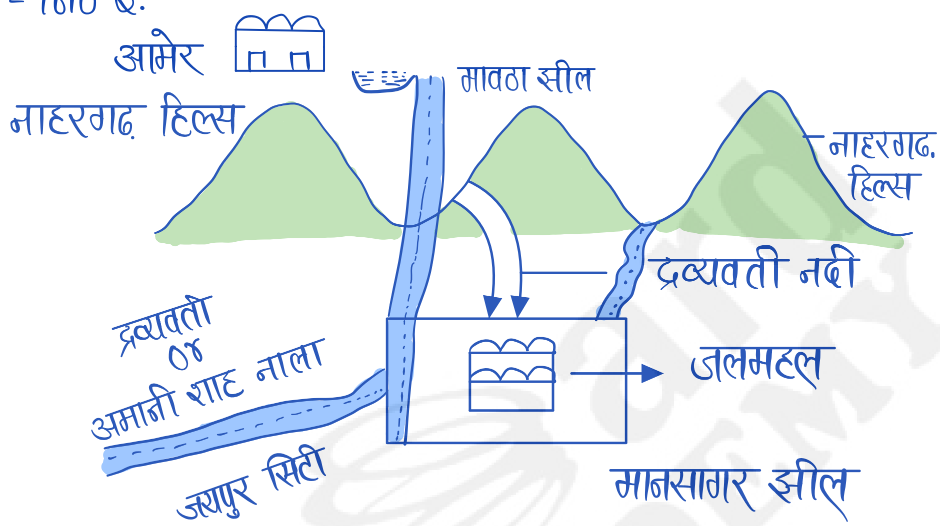

विशेषताएँ-

- मानसागर झील राजस्थान की सर्वाधिक प्रदूषित झील है।
- जल महल इसी झील में स्थित है।
- नाहरगढ़ पहाड़ी इस झील के निकट स्थित है।
- द्रव्यवती नदी या अमानी शाह नाला मानसागर झील से उद्गमित होता है।

14. मावठा झील -

- स्थिति- जयपुर सिटी (वर्षा जल पर आधारित)
- यह एक प्राकृतिक झील है जो आमेर दुर्ग के निकट स्थित है।

15. सिलीसेढ़ झील-

- स्थिति - अलवर (सरिस्का)
- निर्माता - महाराजा विनयसिंह

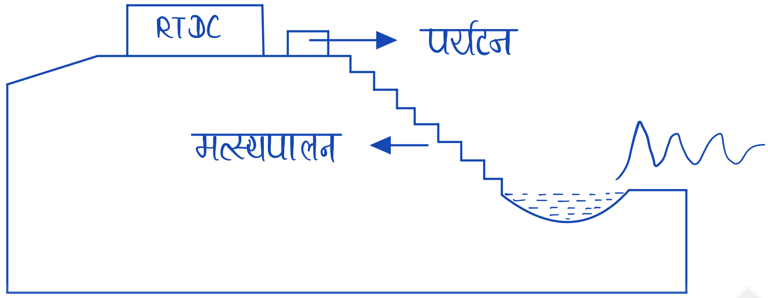

विशेषताएँ-

- मत्स्य पालन व स्थानीय पर्यटन के लिए प्रसिद्ध।
- इस झील को राजस्थान का 'नन्दन कानन' कहा जाता है।
- सिलीसेढ़ झील स्वर्णिम त्रिकोण पर स्थित है।
  - जयपुर
  - दिल्ली
  - आगरा

16. कायलाना झील- (सर प्रताप सागर झील)

- स्थिति - जोधपुर
- निर्माता- सर प्रताप सिंह
- निर्माण काल = 1872 ई.

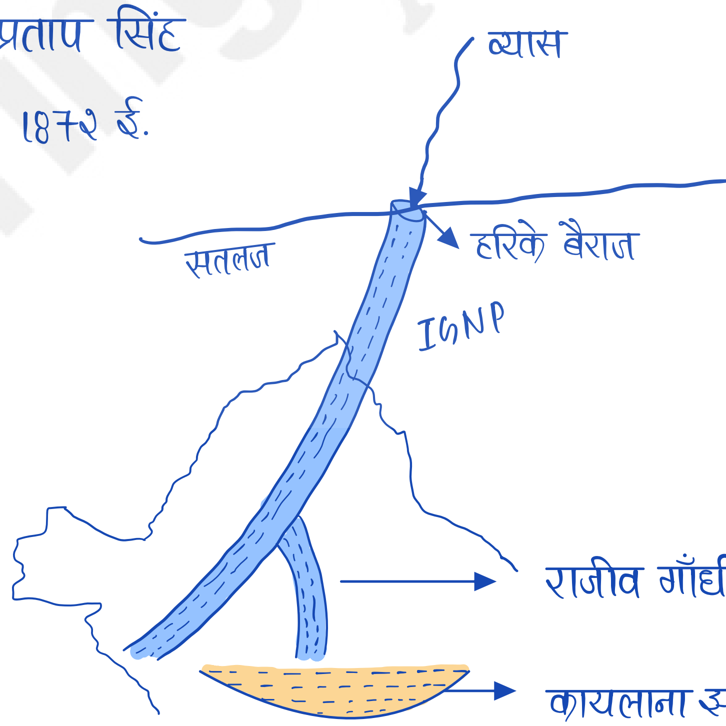

विशेषताएँ-

- कायलाना राजस्थान की पहली झील है जो IGNP से जुड़ी हुई है। [हालही में गढ़ीसर झील (जैसलमेर) को भी IGNP से जोड़ा गया]

17. कोलायत झील (कपिल सरोवर) - बीकानेर

- निर्माता - कपिल मुनि

विशेषताएँ-

(i) इस झील के किनारे 52 घाट स्थित है।

(ii) कार्तिक पूर्णिमा को इस झील के किनारे मेले का आयोजन होता है।

(iii) कार्तिक पूर्णिमा को इस झील में दीपदान किया जाता है।

NOTE → चारण जाति कोलायत झील में भ्रमण (दर्शन) नहीं करती है क्योंकि यहाँ उनकी पूज्य करणी माता के गोद लिए हुए पुत्र की मृत्यु हुई थी।

18. गजनेर झील - (वर्षा जल पर आधारित)

- स्थिति - बीकानेर (गजनेर पैलेस के निकट)

- निर्माता - महाराजा गंगासिंह

NOTE → गजनेर झील को 'पानी का शुद्ध दर्पण' कहा जाता है।

19. रामगढ़ झील-

- स्थिति - बारां

विशेषताएँ-

(i) यह एक क्रेटर/ उल्कापिंड झील का उदाहरण है।

(ii) यह झील घोड़े की नाल जैसी पहाड़ियों से घिरी हुई है।

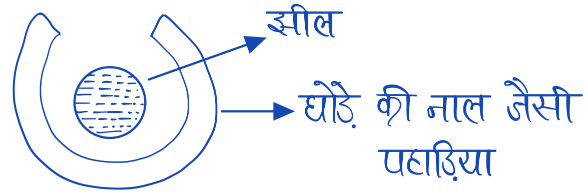

(iii) UNESCO के द्वारा इस झील को 2020 में भू-विरासत की सूची में शामिल किया गया।
(अधिसूचित = 2024)

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राजस्थान की अन्य महत्वपूर्ण झीलें -

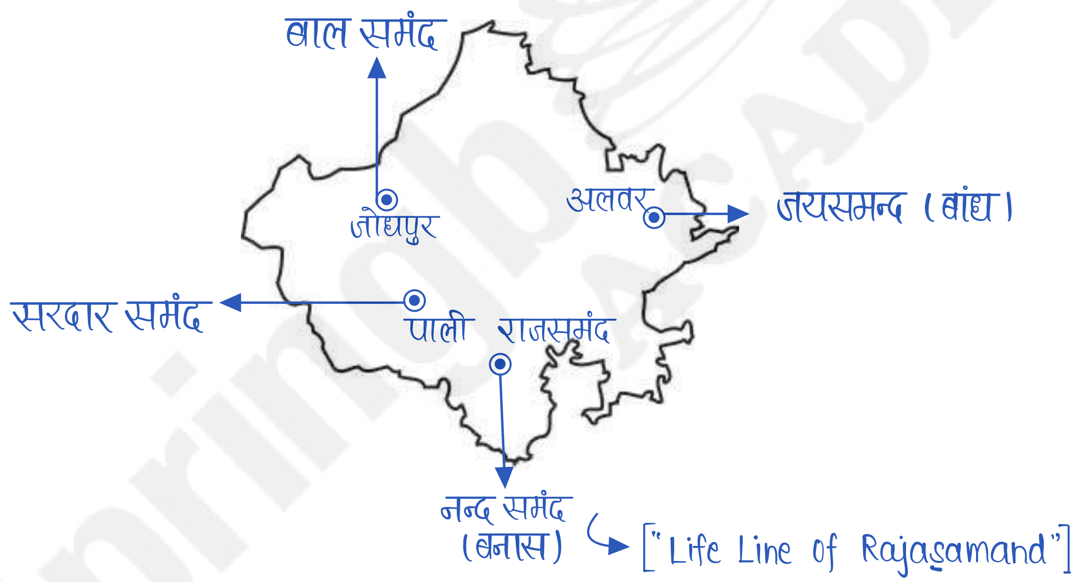

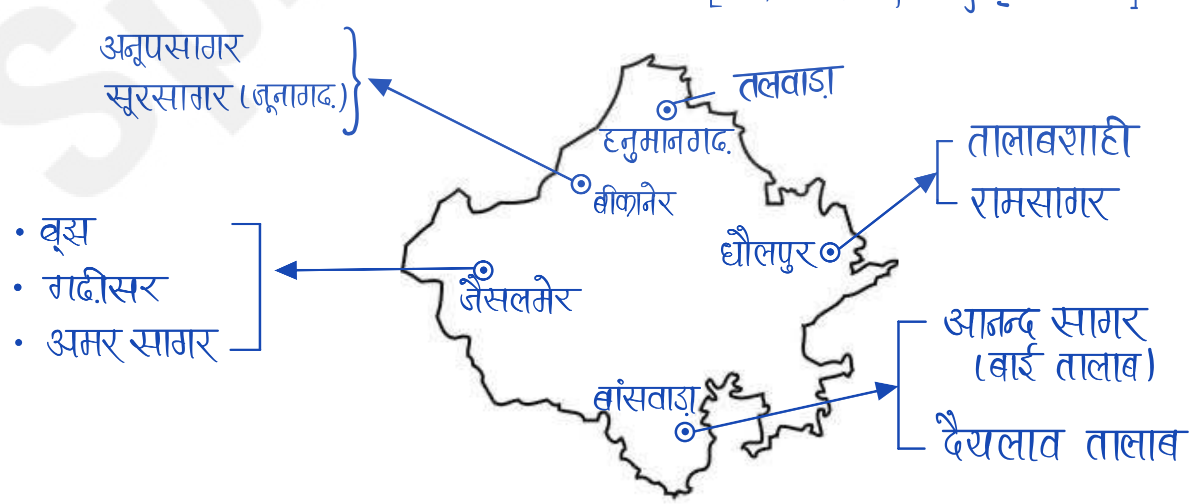

Springboard ACADEMY

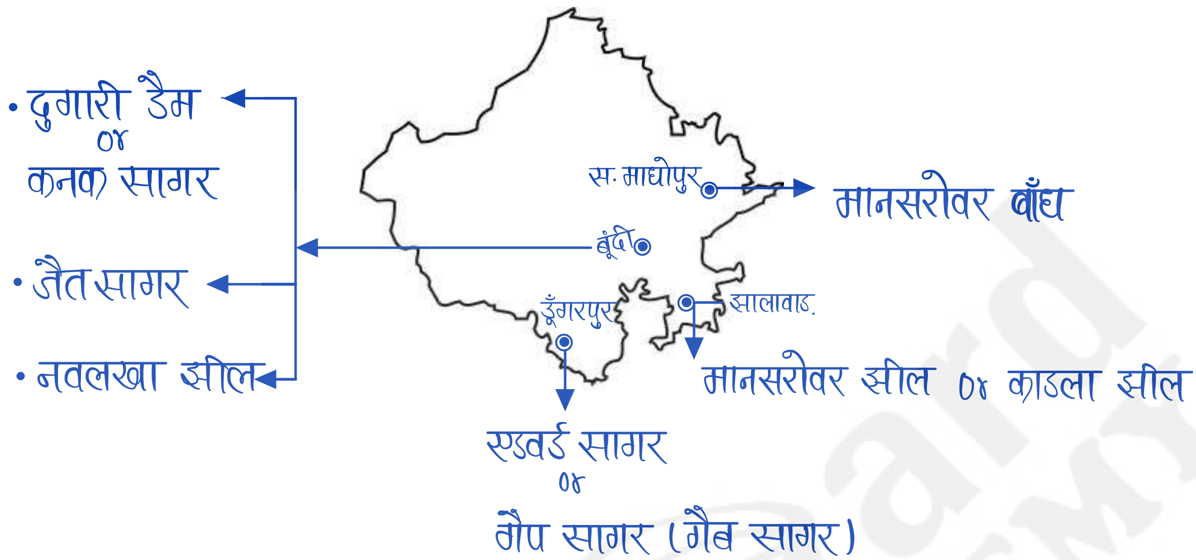

NOTE-

नवलखा → झील = बूंदी
नवलखा → तालाब = बारां
नवलखा → बावड़ी = डूँगरपुर

राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना-

- शुरूआत = 2001 / 1 अप्रेल 2016
- वित्तीय सहयोग = केन्द्र : राज्य
  60% : 40%
- इस कार्यक्रम में शामिल राजस्थान की झीलें - 6

1. मानसागर (जयपुर)
2. पुष्कर (अजमेर)
3. आनासागर (अजमेर)
4. पिछोला (उदयपुर)
5. फतेहसागर (उदयपुर)
6. नक्की झील (सिरोही) (मा. आबू)

Springboard ACADEMY

राजस्थान के प्रमुख नलकूप / कुएँ-

- चाँदन नलकूप
  - 'थार का घड़ा'
  - (जैसलमेर)
- बावड़ी कुआं
  - 'रेगिस्तान का जलमहल'
  - बायतू - बाड़मेर
  - मार्बल निर्मित

झीलों के महत्व-

- नमक उत्पादन
  - Ex. सांभर
  - पचपदरा
  - डीडवाना
- पर्यटन
  - Ex. नक्की
  - मानसागर
  - पुष्कर
- जल संरक्षण
- पेयजल
  - Ex. पिछौला
  - आनासागर
- सिंचाई
  - Eg. जयसमंद
- जैव विविधता
  - जयसमंद
- मत्स्य पालन
- धार्मिक महत्व
  - पुष्कर
  - कोलायत
  - नक्की
- भू- जल संरक्षण

जल संरक्षण तकनीक

- ✔ जल संरक्षण
- ✔ जल संरक्षण की तकनीक
- ✔ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

A. जल संरक्षण-

व्यर्थ बहते हुए पानी को रोकने व उपयोग में लिए जाने वाले पानी का सीमित उपयोग करना, "जल प्रबंधन" कहलाता है।

जल प्रबंधन की तकनीक

परम्परागत तकनीक

1. नाड़ी
2. टोबा
3. बावड़ी
4. झालरा
5. खड़ीन
6. बेरी / कुई
7. टांका / कुंड
8. जोहड़
9. तालाब
10. झील

आधुनिक तकनीक

1. बाँध
2. नहर
3. बूँद-बूँद फव्वारा तकनीक

Springboard ACADEMY

I. परम्परागत तकनीक-

1. नाडी-

- एक तरह का तालाब जिसमें वर्षा जल संग्रहण किया जाता है।
- यह तकनीक पश्चिमी राजस्थान में प्रचलित।
- 1520 ई. में राजस्थान में प्रथम नाडी का निर्माण किया गया।

२. टोबा-

- नाडी से गहरे जल संग्रहण के स्रोत है जिसमें वर्षा जल संग्रहण किया जाता है।
- इसमें संग्रहित जल का उपयोग- पेयजल एवं सीमित सिंचाई के लिए किया जाता है।

3. बावडी-

- बावडी गोलाकार एवं कलात्मक सीढ़ीनुमा कुएँ होते है।
- जल के ये कुएँ, वर्षा जल पर निर्भर।
- सर्वाधिक बावडी- बूंदी में स्थित है जिसे "बावड़ियों का शहर" कहा जाता है।

प्रमुख बावड़ियाँ-

1. नवलखा बावडी → डूँगरपुर
2. लाहिनी बावडी → सिरोही
3. भूत बावडी → जोधपुर ग्रामीण (रणसी गाँव)
4. अनारकली बावडी → बूँदी
5. चाँद बावडी → आभानेरी (दौसा)
6. बड़ी बावडी/ छोटी बावडी → दौसा

7. दूध बावड़ी → सिरोही
8. त्रिमुखी बावड़ी → उदयपुर
9. रानी की बावड़ी → बूँदी
10. गुलाब बावड़ी → बूँदी
11. हाड़ी रानी की बावड़ी → टोडारायसिंह (केकड़ी)
12. नौ मंजिला बावड़ी → नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़)

4. झालरा-

- जल संग्रहण हेतु निर्मित आयताकार कुंड जो किसी झील या तालाब से जल प्राप्त करता है।
- इसके पानी का उपयोग धार्मिक रीति-रिवाजों के स्नान के लिए किया जाता है, पेयजल के लिए नहीं।
  उदा॰ - तूर जी झालरा (जोधपुर)

5. खड़ीन (प्लाया)-

- पश्चिमी राजस्थान में पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा जल संग्रहण के लिए जो अस्थाई पानी की झील बनाई जाती है, उसे खड़ीन या प्लाया कहते है।
- ये सर्वाधिक उत्तरी जैसलमेर में स्थित है।

6. बेरी (कुई)-

- पश्चिमी राजस्थान / अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्रों (जैसलमेर, बीकानेर) में जल संग्रहण के लिए बनाये गए छोटे, गोलाकार या कम गहरे खड्डे को बेरी / कुई कहते है।
- ये जल के लिए तालाब एवं जोहड़ पर निर्भर होते है।

7. टांका / कुंड-

इसका निर्माण मुख्यतः पेयजल के उद्देश्य से घरों या सार्वजनिक स्थानों पर किया जाता है, जिसमें वर्षा जल

Springboard Academy

(पालर पानी) संग्रहित होता है।

जल की शुद्धता के लिए इसे ऊपर से ढका जाता है।

8. जोहड़:-

ग्रामीण क्षेत्र में ढाल की ओर बहता हुआ वर्षा जल निम्न भूमि में एकत्रित होता है, जिसे जोहड़ कहते हैं।

शेखावाटी में अधिक प्रचलित।
↳ 'पानी के कच्चे कुएँ' कहा जाता है।

NOTE- जोहड़ पद्धति को पुनर्जीवित करने का श्रेय श्री राजेन्द्र सिंह (अलवर) को जाता है, इन्हें "जोहड़ वाले बाबा" के नाम से जाना जाता है, जिन्हें 'रमन मैग्सेसे अवार्ड' दिया गया।

9. तालाब-

कृत्रिम/प्राकृतिक जलाशय होता है, जिसका विस्तार एक वर्ग मीटर से दो हैक्टेयर के मध्य होता है।

जिसमें वर्ष में कम से कम चार माह जल उपलब्ध होता है।

प्रमुख तालाब-

- पदम तालाब
- जंगली तालाब
- काला तालाब
- सुख तालाब

} रणथम्भौर

- सरेरी तालाब
- खारा तालाब
- माण्डल तालाब (राजस्थान का सबसे बड़ा तालाब)

} भीलवाड़ा

NOTE- राजस्थान में तालाबों से सर्वाधिक सिंचाई भीलवाड़ा में होती है।

10. झील-

वर्षा जल व नदी बेसिन के जल द्वारा निर्मित जल बेसिन जो मुख्यतः चारों ओर स्थलीय भाग से घिरे रहते है, उसे झील कहते है।

सर्वाधिक झीलें - उदयपुर में

NOTE- राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना- शुरुआत = 2001

↳ राजस्थान की 6 झीलें शामिल-

1. फतेह सागर
2. पिछोला
3. आनासागर
4. पुष्कर
5. नक्की
6. मानसागर

↳ बजट = केन्द्र : राज्य (60:40)

आधुनिक विधियाँ

1. डैम/बाँध परियोजना-

बहते हुए व्यर्थ पानी को रोककर विभिन्न उद्देश्य (सिंचाई, पेयजल, जल विद्युत) को पुरा करने के लिए डैम का प्रयोग किया जाता है।

2. नहर- राजस्थान में नहरों द्वारा सर्वाधिक सिंचाई श्री गंगानगर में होती है।

3. फव्वारा एवं बूंद-बूंद सिंचाई तकनीक-

राजस्थान में नर्मदा नहर क्षेत्र में इस तकनीक को अनिवार्य रूप से लागू किया गया है।

इस तकनीक को इजराइल से ग्रहण किया गया है।

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

(a.) प्रमुख योजनाएँ-

(i) स्वजल धारा योजना- शुरुआत- २००२

केन्द्र सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति हेतु शुरु।

(ii) राजीव गाँधी जल संचय योजना-

- शुरुआत- 20 Aug. 2019
- उद्देश्य - ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजलापूर्ति, वर्षा जल संग्रहण व संरक्षण, भू-जल स्तर में वृद्धि करना, कृषि योग्य क्षेत्र को बढ़ाना।
- इस योजना को दो चरणों में चलाया गया है।

प्रथम चरण	द्वितीय चरण
२० Aug, २०१९	२२ मार्च, २०२३

(iii) अटल भू-जल योजना-

- भारत सरकार : विश्व बैंक (50 : 50)
- शुरुआत – 1 अप्रैल, २०२०
- योजना २०२०-२१ से २०२४-२५, 5 वर्षों के लिए है।
- 7 राज्यों में – हरियाणा, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश

NOTE:- इसमें राजस्थान के 16 जिलों की 38 पंचायत समितियों को शामिल किया गया है।

- उद्देश्य – सामुदायिक भागीदारी से गिरते भूजल स्तर को रोकना।
- नोडल विभाग– भू-जल विभाग

Springboard Academy

(iv) जल स्वावलम्बन योजना-

- शुरुआत- 27 Jan., 2016
  - ↳ गार्दनखेड़ी (झालावाड़) से

- उद्देश्य
  - → ग्रामीण क्षेत्रों में तालाब एवं कुएँ के जल स्तर में सुधार।
  - → चारागाहों का विस्तार।
  - → कृषि उत्पादन को बढ़ावा।

यह योजना 4 चरणों मे चलाई गई-

प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
(27 Jan-2016)	(9 dec. 2016)	(9 dec. 2017)	(3 Oct. 2018)

(v) मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.0- (शुरुआत = 2024-25)

- ↳ इसके अन्तर्गत अगले 4 वर्षों में 20,000 गाँवों में 5,00000 जल संचय संरचनाओं का निर्माण। जिनका बजट 11,200 करोड़ ₹ है।
- ↳ प्रथम चरण (2 वर्ष) - 349 पंचायत समीतियाँ (सभी जिलो की)
  - → 5,135 गाँव चयनित
  - → राशि = 3500 करोड़ ₹
- ↳ उद्देश्य- भू-जल स्तर को बढ़ाना, ग्रामीण क्षेत्रों में जलापूर्ति व हरित क्षेत्र को बढ़ाना।

(vi) जल जीवन मिशन / हर घर जल-

- शुरुआत- 15 अगस्त, 2019
- उद्देश्य- (i) 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण परिवार को घरेलू नल कनेक्शन
  (ii) प्रति व्यक्ति 55 लीटर जल उपलब्धता।
- आर्थिक सहयोग
  - → राज्य = केन्द्र : राज्य (50:50)
  - → उत्तरी-पूर्वी राज्य = केन्द्र : राज्य (90:10)
  - → केन्द्रशासित प्रदेश (100%)
- वर्तमान में इस कार्यक्रम की अवधि को 2028 तक बढ़ा दिया है।
- नोडल मंत्रालय = जल शक्ति मंत्रालय

(b) राज्य जल नीति-

→ 18 feb. 2010

→ इस नीति के अनुसार जल उपलब्धता की प्राथमिकता का क्रम- मानव पेयजल, पशु पेयजल, घरेलू कार्यों के लिए एवं कृषि कार्यों के लिए जलापूर्ति रखा गया है।

(c) भूमिगत जल संसाधन मूल्यांकन - (2023)

1. अतिदोहित क्षेत्र	— 216
2. गंभीर / विषम	— 23
3. अर्द्ध गंभीर/अर्द्ध विषम	— 22
4. सुरक्षित	— 38
5. लवणीय	— 3
	कुल = 302

➢ अन्तर्राष्ट्रीय जल दिवस - 22 मार्च (Theme- 2024 "Water for Peace")

➢ जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम - 1974

संसाधन भूगोल

मिट्टी

1. मृदा का अर्थ
2. मिट्टी का संगठन
3. मिट्टी के प्रकार
4. मृदा की समस्याएँ

1. मृदा का अर्थ–

→ असंगठित चट्टानों की परत

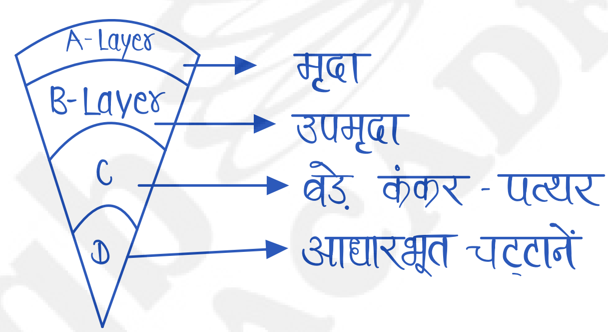

→ पृथ्वी की ऊपरी सतह पर असंगठित चट्टानों की परत को मिट्टी या मृदा कहते हैं।

Note → पेडोलॉजी = मृदा के अध्ययन या मृदा विज्ञान को पेडोलॉजी कहते हैं।

2. मिट्टी का संगठन–

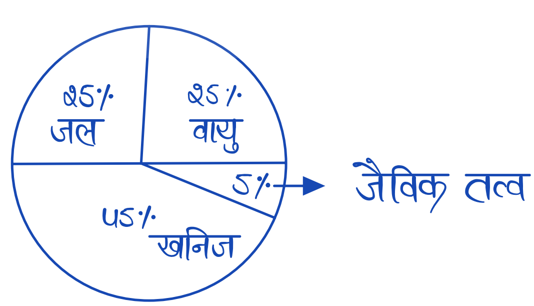

Springboard Academy

3. मिट्टी के प्रकार -

- **भारत** (ICAR)
  - मुख्य प्रकार – 8
  - गौण प्रकार – 27
- **राजस्थान**
  - राज्य कृषि विभाग – 14
  - वैज्ञानिक वर्गीकरण (USDA) – 5

NOTE → [Indian Council Of Agricultural Research
भारतीय अनुसंधान कृषि परिषद्]
– 1929 (नई दिल्ली)

[USDA → United State Department of Agriculture
– 1862]

1. राज्य कृषि विभाग का वर्गीकरण -

राज्य कृषि विभाग द्वारा राजस्थान की मिट्टियों को 14 भागों में बाँटा गया है-

मिट्टी के प्रकार	जिले
1. साई रोजेम्स	श्री गंगानगर
2. रेवेरिना	श्री गंगानगर
3. जिप्सीफेरस	बीकानेर
4. पर्वतीय मिट्टी	उदयपुर, कोटा
5. लाल चिकनी मिट्टी	बांसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, उदयपुर एवं चित्तौड़ का दक्षिणी भाग
6. केल्सी ब्राउन डेजर्ट मृदा	जैसलमेर, बीकानेर

Springboard ACADEMY

7. नॉन केल्सी ब्राउन मृदा	नागौर , अजमेर , सीकर , झुंझुनूं जयपुर , अलवर
8. नवीन भूरी मिट्टी	अजमेर , भीलवाड़ा
9. ग्रे - ब्राउन मिट्टी/ धूसर भूरी जलोढ़ मृदा (लूनी बेसीन)	पाली, जोधपुर , नागौर , जालौर , सिरोही
10. पीली- भूरी मिट्टी (बनास बेसिन)	राजसमंद , भीलवाड़ा , चितौड़ उदयपुर , अजमेर , टोंक , स. माधोपुर
11. मरुस्थलीय मृदा	जैसलमेर , बीकानेर , बाड़मेर , जोधपुर + शेखावाटी
12. मरुस्थलीय बालूका स्तूप मृदा	जैसलमेर , बीकानेर , बाड़मेर , जोधपुर
13 जलोढ़ मिट्टी	अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर स. माधोपुर , टोंक
14. काली मिट्टी (मध्यम गहरी काली मिट्टी)	हाड़ौती - कोटा , बूँदी , बारां, झालावाड़

वैज्ञानिक वर्गीकरण–

- मिट्टियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण USDA के द्वारा किया गया ।
- वैज्ञानिक वर्गीकरण का मुख्य आधार मिट्टी के कणों का आकार है ।

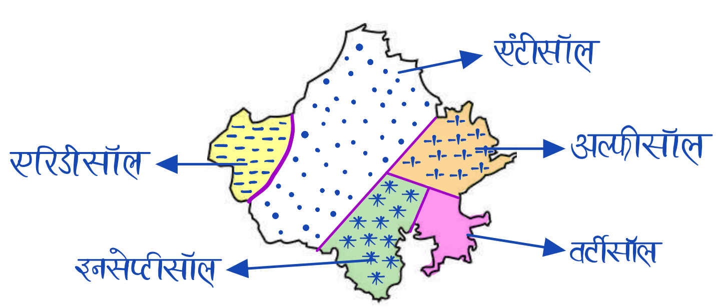

1. एरिडीसॉल-

- यह मिट्टी मुख्यतः प. राजस्थान में पाई जाती है।
- जिसका विस्तार JBBJ (जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, जैस.) में विस्तृत है।
- जलवायु- यहाँ शुष्क जलवायु पाई जाती है।
- उपसमूह- • केल्सी ऑरथिड्स • सेल ऑरथिड्स
  • केम्बो ऑरथिड्स • पेलिऑरथिड्स

2. एंटीसॉल-

एंटीसॉल मुख्यतः राजस्थान के उ. प. भाग में अधिक पाई जाती है।

जलवायु- शुष्क एवं अर्द्धशुष्क

उपसमूह- सामेन्टस और टोरीफ्लूवेंटस

NOTE- एंटीसॉल राजस्थान में सर्वाधिक पाई जाती है।
दूसरी सर्वाधिक पाई जाने वाली मृदा = एरिडीसॉल

3. अल्फीसॉल-

- यह मिट्टी मुख्यतः राजस्थान के पूर्वी मैदान में अधिक पाई जाती है।
- जलवायु - आर्द्र एवं उपार्द्र
- उपसमूह - हेप्लुस्तालफस

4. इनसेप्टीसॉल- (लाल-भूरी)

- यह मिट्टी मुख्यतः राजस्थान के दक्षिणी भाग में अधिक पाई जाती है।

- जिसमें प्रमुख जिले- • RBCU- राजसमंद, भीलवाड़ा, चित्तौड़, उदयपुर, पाली
  • वागड़ — बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर
- जलवायु - अर्द्धशुष्क एवं आर्द्रतुल्य

Springboard ACADEMY

- उपसमूह - उस्टोक्रिप्ट्स

5. <u>वर्टीसॉल</u>-

- वर्टीसॉल मुख्यतः द. पू. राजस्थान / हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़) में पाई जाती है।
- जलवायु - आर्द्र एवं अतिआर्द्र
- उपसमूह - पेल्युस्टर्टस् & क्रोमस्टर्टस्

राजस्थान की मिट्टियों का सामान्य वर्गीकरण

1. बलुई / रेतीली मिट्टी-

उपनाम — मरुस्थलीय / शुष्क मिट्टी / प्यासी मिट्टी

निर्माण - इस मिट्टी का निर्माण बलुआ पत्थर के अपरदन से हुआ है।

- <u>विस्तार / वितरण</u>- इस मिट्टी का विस्तार मुख्यतः प. राजस्थान में है।

  Max.- जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर व शेखावाटी

- <u>मुख्य फसल / कृषि उत्पादन</u>-
  - बाजरा
  - चना
  - मूंगफली
  - दलहन फसलें

- <u>मिट्टी की विशेषताएँ</u>-

1) बलुई मिट्टी राजस्थान में सर्वाधिक पाई जाती है।
2) इसमें Ca (कैल्सियम) की मात्रा अधिक पाई जाती है।
3) इस मिट्टी के कण सर्वाधिक मोटे होते है। इस कारण इसमें बार - बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।

Springboard ACADEMY

२. भूरी-रेतीली मिट्टी- (सिरोजम मिट्टी)

- **निर्माण-** लूनी बेसिन एवं बलुआ पत्थर
- **विस्तार-** पाली, जोधपुर, नागौर, जालौर, चुरू, सीकर, झुंझुनूं (चुरू, सीकर, झुंझुनूं → शेखावाटी)
- **फसल उत्पादन-** जीरा, ईसबगोल, मूँग, मोठ, अरण्डी, चंवला आदि।
- **विशेषताएँ-** इस मिट्टी में फॉस्फेट की मात्रा अधिक पाई जाती है।

३. लवणीय मिट्टी-

- उपनाम
  - खार
  - रेह
  - कल्लर
  - ऊसर (अनुपजाऊ मृदा)

- **निर्माण-** शुष्क क्षेत्रों में अधिक सिंचाई के कारण इस मिट्टी का निर्माण होता है।
- **विस्तार-** IGNP → श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर
  नर्मदा नहर → सांचौर, जालौर, बाड़मेर
- **फसल उत्पादन-** चावल, अनार, गन्ना
- इस मिट्टी में NaCl की मात्रा अधिक होती है।
- न्यूनतम उपजाऊ मृदा होती है।

4. जलोढ़ मिट्टी-

उपनाम
- डेल्टाई मिट्टी
- कछारी मिट्टी
- दोमट मिट्टी → (खादर - बांगर)
  - खादर → नवीन जलोढ़
  - बांगर → पुरानी जलोढ़

Springboard ACADEMY

- **निर्माण-** नदियों के द्वारा जमा किये गये अवसादों से।
- **विस्तार-** अलवर- भरतपुर, करौली, धौलपुर, टोंक, स. माधोपुर
- **उत्पादित फसलें-** सरसों, गेहूँ, गन्ना, चावल

विशेषताएँ-

(i) जलोढ़ मिट्टी सर्वाधिक उपजाऊ मिट्टी है।
(ii) भारत में जलोढ़ मिट्टी सर्वाधिक पाई जाती है।
(iii) इसमें पोटाश की मात्रा अधिक पाई जाती है।

5. काली मिट्टी-

- **उपनाम**
  - कपासी मिट्टी
  - रेगुर मिट्टी
  - स्वतः जुताई मिट्टी
  - ज्वालामुखी / लावा मिट्टी

- **निर्माण-** इस मिट्टी का निर्माण बेसाल्ट लावा चट्टानों से हुआ है।
- **विस्तार-** कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़ (हाड़ौती क्षेत्र)
- **कृषि उत्पादन-** कपास, सोयाबीन, मसाला फसलें।

- **विशेषताएँ-**

(i) काली मिट्टी में क्ले/ चीका अधिक पाई जाती है।

(ii) काली मिट्टी की जलधारण क्षमता सर्वाधिक होती है।

(iii) इस मिट्टी में लोहा, एल्युमिनियम एवं चुना पत्थर ($CaCO_3$) अधिक पाया जाता है।

(iv) काली मिट्टी को चरनोजम व वर्टीसॉल भी कहा जाता है।

Springboard ACADEMY

6. लाल-चिकनी मिट्टी-

- निर्माण - कायान्तरित व रूपान्तरित चट्टानों से निर्मित।
- विस्तार - बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ (वागड़) और उदयपुर चित्तौड़गढ़ के दक्षिणी भाग।
- फसलें - मक्का, चावल, गन्ना।

विशेषताएँ-

- इस मिट्टी में आयरन ऑक्साइड की मात्रा अधिक पाई जाती है, इस कारण इसका रंग लाल होता है।

7. लाल-काली मिट्टी-

- निर्माण - कायान्तरित एवं बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित।
- विस्तार - बूंदी, भीलवाड़ा, चित्तौड़, प्रतापगढ़ (BBCP)
- उत्पादित फसलें - मक्का, कपास, अफीम

8. लाल-पीली मिट्टी-

- विस्तार – बनास बेसिन
  - मेवाड़ मैदान (RBCU)
  - मालपुरा, करौली (ATMs)
- उत्पादित फसलें - सरसों, ज्वार

मिट्टी की समस्याएँ

- अपरदन
- सेम
- लवणीयता
- क्षारीयता
- मृदा अवकर्षण

1. अपरदन-

अर्थ- पृथ्वी की ऊपरी सतह का कटाव 'मृदा अपरदन' कहलाता है।

Springboard ACADEMY

अपरदन का कारण-

- वनों की अत्यधिक कटाई ।
- अति पशुचारण
- अवैज्ञानिक कृषि (बार-बार कृषि करना)
- खनन

अपरदन के कारक-

हवा, वर्षा जल, नदी

अपरदन के प्रकार-

(i) परतदार अपरदन (हवा से) → सर्वाधिक- प. राजस्थान, जैसलमेर

(ii) चादरी अपरदन (वर्षा जल) → सिरोही, राजसमंद

(iii) अवनालिका अपरदन (नदी जल से) → चंबल बेसिन

> NOTE- अपरदन का मुख्य कारक
> राजस्थान = हवा
> भारत व विश्व = जल

✳ उपाय-

i) वृक्षारोपण
ii) चारागाहों का विस्तार
iii) खेत की मेड़बंदी
iv) वैज्ञानिक खनन

> NOTE- अपरदन को 'मृदा की रेंगती हुई मौत' या 'किसान की मौत' कहा जाता है।

२. सेम / Water loging (जलाक्रांता)-

अर्थ- मिट्टी का दलदली होना।
Or
नमी की समस्या

- कारण- अधिक सिंचाई, जल रिसाव ।
- प्रभावी क्षेत्र – हनुमानगढ़ – बड़ोपल , श्रीगंगानगर
- उपाय – सफेदा/ यूकेलिप्टिस का वृक्षारोपण ।
  (इन्डो - डच प्रोग्राम)
  (India - Netherland / Holland)

3. लवणीयता–

- अर्थ- शुष्क क्षेत्रों में अधिक सिंचाई होने के कारण एक सफेद परत का निर्माण होता है।
- प्रभावी क्षेत्र- श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जालौर, सांचौर बाड़मेर ।
- उपाय
  - उर्वरक → जिप्सम
  - विधि → निक्षालन (लीचिंग)

4. क्षारीयता–

- अर्थ- मिट्टी का Ph मान 8 से अधिक होना क्षारीयता कहलाता है।
- कारण- रासायनिक उर्वरकों/ खादों का अधिक उपयोग ।
- उपाय- ग्वार व ढेंचा की हरी खाद ।

5. मृदा अवकर्षण-

- अर्थ- मिट्टी की भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणवत्ता में ह्रास होना 'मृदा अवकर्षण' कहलाता है।

Springboard ACADEMY

- **कारण** - रासायनिक खादों का अधिक उपयोग।
- **उपाय** - जैविक खादों का उपयोग।

प्रथम जैविक

- राज्य (भारत में)
  - सिक्किम
- जिला (राजस्थान में)
  - डूँगरपुर

Springboard ACADEMY

E. वृक्षारोपण कार्यक्रम

1. मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम →

- शुरुआत- 1977-78
- जिले - 10
- वित्तीय भागीदारी - केन्द्र : राज्य = 75:25

> NOTE :- मरुस्थल विकास कार्यक्रम (DDP)
> - शुरु 1977-78
> - जिले - 16
> - वित्तीय सहयोग - केन्द्र : राज्य - 75:25

2. ऑपरेशन खेजड़ी →

- शुरुआत- 1991
- उद्देश्य - मरुस्थलीकरण को रोकना।

3. अरावली वृक्षारोपण योजना - (सहयोग - जापान)

- शुरुआत- 1992 (8 वर्ष, (1992- 2000)
- 10 जिले शामिल- अलवर, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, नागौर, पाली सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़ एवं बांसवाड़ा।

4. राज्य वानिकी क्रियान्वयन योजना-

- 1996 से 2016 (20 वर्षीय कार्यक्रम)
- उद्देश्य - राज्य में वानिकी को बढ़ावा।

5. राज्य वानिकी एवं जैव विविधता कार्यक्रम-

- शुरुआत - 2003
- उद्देश्य-
  - वनों एवं जैव विविधता को बढ़ाना।
  - मिट्टी एवं भू-जल संरक्षण
  - गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका कार्यक्रम

Springboard ACADEMY

चरण

फेज- Ist (२००३-१०)	फेज- IInd (२०११-२२)	फेज- IIIrd (२०२३) (Next - 8 year)
18 जिले	15 जिले (10 मरुस्थलीय + 5 गैर मरुस्थलीय)	13 जिले → वित्त = 70% : 30% फ्रांस : राज्य
सहयोग - JICA (जापान)	JICA (जापान)	फ्रेंच डेवलपमेंट एजेंसी (फ्रांस)

JICA → Japan International Cooperation Agency

> नोट :- फेज-IInd के गैर-मरुस्थलीय जिलों में जयपुर, सिरोही, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर एवं भीलवाड़ा शामिल थे।

6. **हरित राजस्थान कार्यक्रम-** (२००९-२०१४)
   - यह वृक्षारोपण की एक पंचवर्षीय योजना है।

7. **वन धन योजना-** (राज्य सरकार)
   → 12 Aug., 2015 से शुरू।
   - उद्देश्य- वन क्षेत्रों के निकट रहने वाले लोगों के विकास एवं उनकी वनों पर निर्भरता कम करने व रोजगार उपलब्ध करवाना।

8. **वन धन विकास योजना** (केन्द्र सरकार) →
   - शुरुआत- 14 अप्रैल, 2018
   - उद्देश्य- गैर लकड़ी आधारित उत्पादों द्वारा आदिवासियों की आय बढ़ाना।

9. **घर- घर औषधि योजना-**
   - शुरुआत- 1 अगस्त २०२१ (२०२१ से २०२६)

↳ उद्देश्य- • रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना।
• औषधीय पादपों को बढ़ाना।

Note- इस योजना में 4 पादपों को शामिल किया गया है-
तुलसी, अश्वगंधा, कालमेघ, गिलोय

F. वन संरक्षण पुरस्कार

1. अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार- प्रारम्भ- 1994

उद्देश्य- • वृक्षारोपण • वन संरक्षण • वन्य जीव संरक्षण

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है

व्यक्तिगत वन संरक्षण
↓
राशि- 50 हजार
↓
1. ओम सिंह राजावत (2018 में)
2. नारायण लाल कुमावत (2019)
3. श्याम सुन्दर पालीवाल (2020)
4. अभिलाषा एवं बच्चू सिंह वर्मा (2021)
5. पवन कुमार जैन (2022)

व्यक्तिगत वन्य जीव संरक्षण
↓
राशि- 50 हजार
↓
1. सतनाम सिंह (2018 में)
2. गजेन्द्र सिंह झांसी (2020)
3. पद्म सिंह राठौड़ (2021)
4. मोहित शर्मा एवं दिव्या शर्मा (2022)

संस्थागत वन सुरक्षा एवं प्रबन्धन
↓
राशि- 1 लाख
↓
(i) वंडर सीमेंट कम्पनी R.K नगर, चित्तौड़ (2018 में)
(ii) मानव सेवा संस्थान, हनुमानगढ़ (2018 में)
(iii) वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति, पाटिया-उदयपुर (2018 में)
(iv) वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति, सती की चोरी-उदयपुर (2020)

2. इंदिरा प्रियदर्शनी वृक्ष मित्र पुरस्कार- (शुरुआत-1986)

यह पुरस्कार भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा

उन व्यक्तियों और संस्थानों को दिया जाता है, जिन्होंने वनीकरण और बंजर भूमि विकास के क्षेत्र में अग्रणी और अनुकरणीय कार्य किया है।

राशि- २,50,000 रु.

3. <u>राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार</u>- शुरुआत- २०1२ (5 जून)

यह पुरस्कार तीन स्तर पर दिया जाता है

- व्यक्तिगत → राशि- २ लाख + रजत कमल
- नगरीय निकाय → 3 लाख + रजत कमल
- संस्थागत → 5 लाख + रजत कमल

4. <u>कैलाश सांखला वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार</u>- (शुरुआत-२010)

राशि- 50,000 रूपये (वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु)

5. <u>वनपालक पुरस्कार</u>- यह पुरस्कार सरकारी विभाग में कार्य करने वाले वन रक्षक और वन विभाग के कर्मचारियों को दिया जाता है।

ज. वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी अधिनियम एवं परियोजनाएँ

- ➡ वन्य जीव संरक्षण अधिनियम - 1972
- ➡ बाघ संरक्षण परियोजना - 1973
- ➡ मगरमच्छ संरक्षण परियोजना - 1975
- ➡ वन संरक्षण अधिनियम - 1980 (संशोधित-1988)
- ➡ पर्यावरण संरक्षण अधिनियम - 1986

➡ हाथी संरक्षण परियोजना - 1992

➡ जैव विविधता संरक्षण अधिनियम - २००२ (नियम - २०10)

➡ गोडावण संरक्षण परियोजना - २०13

H. प्रमुख दिवस

- 14 जनवरी, 31 जनवरी → जीव जंतु पखवाड़ा
- २ फरवरी → रामसर/ विश्व आर्द्रभूमि दिवस
- २1 मार्च → विश्व वानिकी दिवस
- २२ मार्च → जल दिवस
- २२ अप्रेल → पृथ्वी दिवस
- २२ मई → जैव विविधता दिवस
- 5 जून → विश्व पर्यावरण दिवस
- 1 जुलाई - 7 जुलाई → वन महोत्सव एवं वन सप्ताह

(राजस्थान में राज्य वन महोत्सव - 1२ सितम्बर)

- 16 सितम्बर → ओजोन दिवस
- 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर या (२ अक्टूबर से 8 अक्टूबर) → वन्य जीव सप्ताह

थीम - २०२5

- २ फरवरी → Protecting wetlands for our Common future.
- २1 मार्च → Forests and food.

Springboard ACADEMY

- २२ मार्च → Glacier Preservation
- २२ अप्रैल → Our earth, our planet
- २२ मई → Harmony with nature and sustainable Development
- 5 जून → Combating Plastic Pollution
- 16 सितम्बर → स्वयं update करे

Springboard ACADEMY

राजस्थान में जैव विविधता एवं वन्य जीव संरक्षण

- ✓ पारिस्थितिकी तंत्र
- ✓ राजस्थान में जैव विविधता एवं वन्यजीव चुनौतियाँ
- ✓ वन्यजीव एवं जैव विविधता संरक्षण

पारिस्थितिकी तंत्र (100 words)

- राजस्थान राज्य को 4 पारिस्थितिकी तंत्रों में बाँटा गया है-

1. मरु पारिस्थितिकी तंत्र
2. अरावली पारिस्थितिकी तंत्र
3. पूर्वी मैदान पारिस्थितिकी तंत्र
4. हाड़ौती पारिस्थितिकी तंत्र

1. मरु पारिस्थितिकी तंत्र-

- उत्तर- पश्चिम राजस्थान में विस्तृत।
- वनस्पति- इस पारिस्थितिकी तंत्र में जीरोफाइट्स या मरुद्भिद/ कंटीली वनस्पति पाई जाती है।
  जैसे- कैक्टस, कंटीली झाड़ियाँ, डंडा थोर
- वन्यजीव→ मरु लोमड़ी, गोडावण, चिंकारा, कुरजा, छोटा किलकिला काला हिरण।
- विशेषता→ इस पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता कम पाई जाती है क्योंकि यहाँ वर्षा एवं वनस्पति सघनता कम होती है।

Springboard ACADEMY

२. अरावली पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर विस्तृत है।
- वनस्पति → उपोष्ण सदाबहार, उष्ण धोक, उष्ण शुष्क मानसूनी/ पतझड़
- वन्यजीव → कब्र बिज्जु (उदयपुर), जंगली मुर्गे, भेड़िये (राजसमंद), खड़मोर (अजमेर), चीतल (जयपुर), सांभर (अलवर), खरगोश (दौसा)

> NOTE- इस पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता सर्वाधिक पाई जाती है। क्योंकि यहाँ वनस्पति सघनता अधिक होती है।

3. पूर्वी मैदान पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह पारिस्थितिकी अरावली के पूर्व में स्थित है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में उष्ण शुष्क मानसूनी वनस्पति (पतझड़ वन) पाई जाती है, जैसे- साल, सागवान, शीशम, पलाश एवं खैर।
- वन्य जीव- इस पारिस्थितिकी तंत्र में पक्षी जैव विविधता अधिक पाई जाती है। जैसे-
  - जलपीपी - बांसवाड़ा
  - जांघिल - डूँगरपुर
  - सारस - भरतपुर
  - मोर - भीलवाड़ा
  - हंस - टोंक
  - इंडियन स्कीमर (पंछीड़ा) - धौलपुर

4. हाड़ौती पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह पा॰ तंत्र राजस्थान के द॰ पू. क्षेत्र में स्थित है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में उष्ण सागवान वन पाए जाते है।
- वनस्पति- सागवान, गूलर, महुआ, तेन्दु।

Springboard Academy

- वन्यजीव–
इसमें जलीय जैव विविधता अधिक पाई जाती है।
जैसे
घड़ियाल (करौली), मगरमच्छ (बारां), गांगेय सूंस,
उद्बिलाव (कोटा), सुर्खाब (बूंदी)

विशेषता- इस पारिस्थितिकी तंत्र में वर्षा सर्वाधिक होती है। इस कारण सतही जल की उपलब्धता अधिक होती है।

राजस्थान में पारिस्थितिकी की समस्याएँ/चुनौतियाँ

चुनौतियाँ- (50 words)

- राजस्थान में क्षेत्रफल की तुलना मे वन्य जीव कम पाए जाते है।
- जिसका कारण–

मानवीय कारण	जलवायु/ पर्यावरणीय कारण
1. बढ़ती हुई जनसंख्या एवं पशु सम्पदा।	1. राजस्थान में अल्प वर्षा का होना।
2. वनों एवं वृक्षों की कटाई।	2. सतही एवं भूमिगत जल की कम उपलब्धता
3. बढ़ता हुआ नगरीकरण एवं औद्योगिकरण।	3. प्राकृतिक वनस्पति की कमी।
4. मानव व वन्यजीवों के मध्य बढ़ते हुए आपसी संघर्ष।	4. बढ़ता हुआ मरुस्थलीकरण।
5. अरावली क्षेत्र में बढ़ता हुआ खनन।	5. वन्यजीवों के मध्य बढ़ते हुए आपसी संघर्ष।

वन्यजीव / पारिस्थितिकी संरक्षण

असम के बाद, राजस्थान वन्य जीवों में दूसरा स्थान रखता है। आजादी से राजस्थान को "शिकारियों के स्वर्ग" के रूप में जाना जाता था। आजादी के बाद, पेड़ों की अनियंत्रित कटाई और अवैध शिकार के कारण, केन्द्र और राज्य सरकार दोनों वन और वन्यजीव संरक्षण के लिए संयुक्त रूप से प्रयासरत है।

वन्य जीवों को दो तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है-

वन्यजीव संरक्षण

स्वः स्थाने संरक्षण (In-Situ)	बाह्य स्थाने संरक्षण (Ex-Situ)
जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में संरक्षित करना।	जीवों को उनके प्राकृतिक आवास के बाहर संरक्षित करना।
उदा.• राष्ट्रीय उद्यान • वन्यजीव अभयारण्य • बाघ संरक्षण परियोजना • रामसर साइट • कन्जर्वेशन रिजर्व • आखेट निषेध क्षेत्र एवं जैव मण्डल	उदा.- • जंतुआलय • मृग उद्यान • पशु जीन बैंक एवं एक्वेरियम

I. स्वः स्थाने संरक्षण-

→ राष्ट्रीय उद्यान- राजस्थान में तीन राष्ट्रीय उद्यान है, जो निम्न लिखित है- (a) रणथम्भौर

(b) केवलादेव

(c) मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान

Springboard Academy

(a) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान- (1980)

- सवाई माधोपुर (२८२.03 Km²)
- राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान (बाघों का घर)
- राजस्थान की प्रथम बाघ परियोजना (प्रमुख बाघिन - मछली / T-16)
- त्रिनेत्र गणेश मन्दिर, जोगी महल एवं कुक्कुर घाटी (डॉग वैली) स्थित।
- धोक वृक्ष की अधिकता
- रणथम्भौर में स्थित तालाब- काला तालाब, जंगली तालाब, सुख तालाब

(b) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान / घाना पक्षी विहार (1981)-

- भरतपुर, क्षेत्र॰→ (२8.73 Km²)
- यूनेस्को धरोहर सूची में शामिल राज्य की एकमात्र प्राकृतिक धरोहर (1985)
- शीत ऋतु में साइबेरियन सारस यहाँ आते है।
- इसे पक्षियों का स्वर्ग भी कहते है।
- 1981 में रामसर सूची में शामिल।
- डॉ. सलीम अली की कर्मस्थली
- अजान बाँध इसी अभयारण्य में स्थित है।
- इस राष्ट्रीय उद्यान में 'ऐंचा' घास अधिक पाई जाती है।

(c). मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान- (२012) (कोटा, चित्तौड़गढ़)

- राजस्थान का नवीनतम राष्ट्रीय उद्यान।
- राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान (२97.6२ वर्ग कि.मी.)
- गागरोनी तोते एवं बाघों के लिए प्रसिद्ध।

- राज्य की तीसरी बाघ परियोजना
- सागवान वनस्पति अधिक पाई जाती है।

NOTE:- मुकुन्दरा
- राष्ट्रीय उद्यान - (कोटा - चित्तौड़)
- हिल्स - (कोटा - झालावाड़)
- बाघ परियोजना - (कोटा, बूँदी, झालावाड़, चित्तौड़)
- दर्रा अभयारण्य - (कोटा, झालावाड़)

अभयारण्य

राज्य अभयारण्य - (२६)

सबसे बड़ा

1. राष्ट्रीय मरुउद्यान (3162 Km²)
2. कैलादेवी अभयारण्य (677 Km²)
3. कुम्भलगढ़ अभयारण्य (611 Km²)

सबसे छोटा

1. सरिस्का - अ (3 Km²)
2. सज्जनगढ़ अभयारण्य (5 Km²)
3. तालछापर अभयारण्य (7 Km²)

प्रमुख अभयारण्य

नाम	क्षेत्र	वर्ष	विशेषताएँ
रामसागर	धौलपुर	1955	
वन विहार	धौलपुर	1955	
केसरबाग	धौलपुर	1955	
सरिस्का - अ	अलवर	2012	राज. का सबसे छोटा अभयारण्य
सरिस्का	अलवर	1955	• राज. की दूसरी बाघ परियोजना (1978) • मोर व हरे कबूतर के लिए प्रसिद्ध पांडुपोल, भर्तृहरि मंदिर, नीलकण्ठ महादेव एवं नारायणी माता मन्दिर।
सवाई माधोपुर	सवाई माधोपुर	1955	
जयसमंद	सलूम्बर	1955	"जलचरों की बस्ती" क्योंकि जलीय जैव विविधता अधिक।

दर्रा	कोटा, झालावाड़	1955	• गागरोनी तोते
तालछापर	चुरु	1962	• काले हिरण, कुरजा पक्षी एवं गुरु द्रोणाचार्य आश्रम स्थित। • मोचिया घास
कुंभलगढ़	उदयपुर, पाली व राजसमंद	1971	• भेड़ियों एवं रणकपुर जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध।
जवाहर सागर	बूंदी, कोटा, चित्तौड़गढ़	1975	• घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध। • गरड़िया महादेव मन्दिर, गेपरनाथ मन्दिर
राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल	धौलपुर, करौली बूंदी, कोटा, स. माधोपुर	1979	• घड़ियाल, मगरमच्छ, डॉल्फिन के लिए प्रसिद्ध।
सीतामाता वन्य जीव अभयारण्य	प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ व सलूम्बर	1979	• यहाँ अधिकतम जैव विविधता पाई जाती है। • सागवान वृक्ष अधिक पाए जाते है। • उड़न गिलहरी, पैंगोलिन, चीतल और चौसिंगा के लिए प्रसिद्ध
नाहरगढ़	जयपुर	1980	• जैविक उद्यान के रुप में विकसित • जयपुर जन्तुआलय (रामनिवास बाग से) स्थानांतरित • इसे एक्जोटिक पार्क के रुप में स्थापित किया जायेगा। • लॉयन सफारी की शुरुआत की।
राष्ट्रीय मरु उद्यान	जैसलमेर, बाड़मेर ($3162\ Km^2$)	1980	• राज्य का सबसे बड़ा अभयारण्य, सेवण घास सर्वाधिक, गोडावण एवं चिंकारा अधिक • इसमें फॉसिल पार्क स्थित है। • गोड़ावण प्रजनन केन्द्र
रामगढ़ विषधारी	बूंदी	1982	• इसमें अजगर पाए जाते है। • इसमें मेज नदी बहती है। • कनक सागर झील (दुगारी बाँध) • राज्य की 4^{th} बाघ परियोजना

जमवारामगढ़	जयपुर	1982	• धोक वन पाए जाते है • जमवाय माता का मन्दिर
टॉडगढ़ अरावली	ब्यावर, पाली, राजसमंद	1983	
फुलवारी की नाल	उदयपुर (कोटड़ा हिल्स)	1983	• सोम, मानसी व वाकल नदियाँ बहती है।
भैंसरोडगढ़	चित्तौड़गढ़	1983	• घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध • चम्बल + ब्राह्मणी नदी के किनारे स्थित
शेरगढ़	बारां	1983	• ये साँपों, शेरगढ़ दुर्ग, परवन नदी के लिए प्रसिद्ध। "साँपों की शरणस्थली"
कैलादेवी	करौली सवाई माधोपुर	1983	सर्वाधिक धोक वन
सवाई मानसिंह	सवाई माधोपुर	1984	
बंध बारेठा	भरतपुर	1985	"पक्षियों का घरौंदा", कुकुन्द नदी व बंध बारेठा झील
सज्जनगढ़	उदयपुर	1987	• "प्रथम बॉयोलॉजिकल पार्क" • राजस्थान का दूसरा छोटा अभ्यारण्य
बस्सी	चित्तौड़गढ़	1988	जलेश्वर महादेव
माउंट आबू	सिरोही	2008	• 'डिक्लिप्टेरा आबू ऐंसिस' वनस्पति पाई जाती है। (अम्बरतरी) • जंगली मुर्गे

बाघ परियोजनाएँ

राजस्थान में 5 बाघ परियोजनाएँ

- रणथम्भौर
- सरिस्का
- मुकुंदरा हिल्स
- रामगढ़ विषधारी
- धौलपुर-करौली

Springboard Academy

1. रणथम्भौर	1974	स. माधोपुर करौली बूँदी टोंक	1530.23 Km²	रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान, स. माधोपुर अभयारण्य, कैलादेवी, राष्ट्रीय चम्बल अभ.
2. सरिस्का	1978	अलवर, जयपुर कोटपुतली-बहरोड़	1213.34 Km²	सरिस्का और जमवारामगढ़ अभयारण्य
3. मुकुंदरा हिल्स	2013	कोटा, बूंदी, झालावाड़ चित्तौड़	1135.78 Km²	मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान, दर्रा अभयारण्य चम्बल अभयारण्य जवाहरसागर अभयारण्य
4. रामगढ़ विषधारी	2021	बूंदी, कोटा	1496.59 Km²	रामगढ़ विषधारी
5. धौलपुर-करौली	2023	धौलपुर-करौली	599.64 Km²	

रामसर साइट

→ वर्तमान में राज्य में दो रामसर साइट है।

1. केवलादेव 1981 → साइबेरियन सारस
2. सांभर 1990 → कुरजा एवं राजहंस

कंजर्वेशन रिजर्व

→ राज्य में कुल 37 कंजर्वेशन रिजर्व है,-

1. जोड़बीड़ गढ़वाला ———→ बीकानेर

2. जवाई बाँध लैपर्ड-I → पाली
3. जवाई बाँध लैपर्ड-II → पाली
4. बीड़ → झुंझुनूं
5. बांसियाल-खेतड़ी → झुंझुनूं
6. बांसियाल-खेतड़ी बागोर → झुंझुनूं
7. मनसा माता → झुंझुनूं,
8. बीसलपुर → अजमेर
9. सुंधा माता → जालौर-सिरोही
10. शाकम्भरी → झुंझुनूं
11. गोगेलाव → नागौर
12. रोटू → नागौर
13. गुढ़ा बिश्नोईयां → जोधपुर
14. उम्मेदगंज पक्षी विहार → कोटा
15. शाहबाद कन्जर्वेशन → बारां
16. बीड़ घास फुलिया खुर्द → भीलवाड़ा
17. बागदरा मगरमच्छ → उदयपुर
18. रणखार → जालौर
19. शाहबाद-तलहटी → बारां
20. वाड़ाखेड़ा → सिरोही
21. झालाना-आमागढ़ → जयपुर
22. रामगढ़-कुंजी-सुनवास → बारां
23. अरवर गाँव (खड़मोर) → अजमेर
24. खींचन (कुरजां) → फलौदी
25. हमीरगढ़ → भीलवाड़ा
26. बांझ आम्ली → बारां
27. सोरसन-I → बारां
28. सोरसन-II → बारां
29. सोरसन-III → बारां
30. महसीर → उदयपुर

Springboard Academy

31. बीड़ फतेहपुर → सीकर
32. बीड़ मुहाना - A → जयपुर
33. बीड़ मुहाना - B → जयपुर (सबसे छोटा)
34 अमरख महादेव लैपर्ड → उदयपुर
35. बालेश्वर → सीकर (सबसे बड़ा)
36. गंगा भैरव घाटी → अजमेर
37 आसोप कंजर्वेशन रिजर्व → भीलवाड़ा (नवीनतम)

आखेट निषेध क्षेत्र (राज्य में कुल 33)

- सबसे बड़ा - कोल्सर सम्वतसर - चुरू - बीकानेर
- सबसे छोटा - कनक सागर (बूँदी)
- अन्य
  - जोधपुर – डोली, गुढा विश्नोई
  - बीकानेर – जोड़बीड़, मुकाम, बज्जू, देशनोक
  - अजमेर – सोखलिया, तिलोरा
  - जयपुर – सन्थाल, महला

II. बाह्य स्थाने संरक्षण :-

A. जन्तु आलय – राजस्थान में 5 जन्तु आलय है।

(i) जयपुर जन्तुआलय-
राज्य का प्रथम जन्तुआलय।

निर्माण - रामसिंह-II, (1876) राम निवास बाग
वर्तमान में नाहरगढ़ अभयारण्य में स्थानांतरित।
यहाँ घड़ियाल प्रजनन केन्द्र स्थित है।

(ii) उदयपुर जन्तुआलय- 1878, गुलाबबाग (उदयपुर) में स्थापित।
→ राज्य का दूसरा जन्तुआलय
वर्तमान- सज्जनगढ़ जैविक उद्यान में स्थानांतरित।

(iii) बीकानेर जन्तुआलय- स्थापना - 1922

(iv) जोधपुर जन्तुआलय-

स्थापना- 1936
पक्षीशाला एवं गोडावन प्रजनन केन्द्र स्थित है।

(v) कोटा जन्तुआलय- इसकी स्थापना- 1954

(8) मृग उद्यान- राजस्थान में कुल 7 मृग उद्यान है।

1. अशोक	→ जयपुर	5. पुष्कर	→ अजमेर
2. संजय	→ जयपुर	6. सज्जनगढ़	→ उदयपुर
3. अमृता देवी	→ जोधपुर	7. दुर्ग	→ चित्तौड़गढ़
4. माचिया सफारी	→ जोधपुर		

वन्यजीव शुभंकर – शुरुआत- मार्च 2016, वन विभाग द्वारा

1. अजमेर	→ खड़मोर पक्षी	18. जालौर	→ भालू
2. अलवर	→ सांभर	19. जोधपुर	→ कुरजा पक्षी
3. बारां	→ मगरमच्छ	20. कोटा	→ उदबिलाव
4. बीकानेर	→ बटबड़/ रेत का तीतर	21. टोंक	→ हंस
5. बूंदी	→ सुर्खाब	22. प्रतापगढ़	→ उड़न गिलहरी
6. चुरू	→ काला हिरण	23. स. माधोपुर	→ बाघ
7. दौसा	→ खरगोश	24. सीकर	→ शाहिन (बाज)
8. डूँगरपुर	→ जांघिल	25. सिरोही	→ जंगली मुर्गी
9. भीलवाड़ा	→ मोर	26. झालावाड़	→ गागरोनी तोता
10. बाँसवाड़ा	→ जलपीपी	27. करौली	→ घड़ियाल
11. बाड़मेर	→ लोमड़ी	28. नागौर	→ राजहंस
12. भरतपुर	→ साइबेरियन सारस	29. पाली	→ तेंदुआ
13. चित्तौड़गढ़	→ चौसिंगा	30. राजसमंद	→ भेड़िया
14. झुंझुनूं	→ काला तीतर	31. श्रीगंगानगर	→ चिंकारा

१५. धौलपुर → पंचीरा (इंडियन स्कीमर)	३२. उदयपुर → कब्र बिज्जू
१६. हनुमानगढ़ → छोटा किलकिला	३३. जयपुर → चीतल
१७. जैसलमेर → गोडावण	

मुख्य वन्यजीव–

१. चिंकारा–

- 1981 में राज्य पशु घोषित।
- वैज्ञानिक नाम → गजेला-गजेला
- नाहरगढ़ अभयारण्य एवं राष्ट्रीय मरुस्थल अभयारण्य चिंकारा के लिए प्रसिद्ध।

२. गोडावण–

- 1981 में राज्य पक्षी घोषित।
- वैज्ञानिक नाम- Ardeotis Nigriceps
- इसे ग्रेट 'इंडियन बस्टर्ड' एवं 'सोन चिड़िया' भी कहा जाता है।
- यह सर्वाधिक जैसलमेर (मरु उद्यान) अजमेर (सांखलिया) एवं बारां (सोरसन) में पाया जाता है।
- गोडावन प्रजनन केन्द्र, जोधपुर, जैसलमेर (रामदेवरा एवं सम) एवं बारां (सोरसन) में स्थित है।

Springboard Academy

उद्योग / Industries

- ✓ सामान्य परिचय
- ✓ उद्योगों का वर्गीकरण
- ✓ औद्योगिक विकास
- ✓ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

A. सामान्य परिचय –

औद्योगिक विकास की दृष्टि से राजस्थान पिछड़ा हुआ राज्य है क्योंकि–

- राजस्थान में जलवायु की विपरित दशाएँ पाई जाती है।
- आधारभूत अवसंरचना का अल्प विकास
- औद्योगिक क्षेत्र में निवेश कम होना।
- कुशल श्रमिकों का अभाव।

कोटा को तीव्र औद्योगिक विकास के कारण राजस्थान की "औद्योगिक नगरी" कहा जाता है।

↳ वर्तमान में राजस्थान में-

- सर्वाधिक उद्योग/फैक्ट्री - जयपुर
- सर्वाधिक वृहद उद्योग - अलवर

B. उद्योगों का वर्गीकरण –

उद्योगों का वर्गीकरण

- आकार के आधार पर
- विनिर्माण के आधार पर
- स्वामित्व के आधार पर

Springboard ACADEMY

1. **आकार के आधार पर-** आकार के आधार पर उद्योगों को तीन भागों में बाँटा गया है, जिसका आधार पूँजी एवं टर्नओवर है।

उद्योग	पूँजी / निवेश	टर्नओवर
(i) सूक्ष्म	2.5 करोड़	10 करोड़
(ii) लघु	2.5-25 करोड़	10-100 करोड़
(iii) मध्यम	25-50 करोड़	100-500 करोड़

कुटीर उद्योग- निम्न तकनीक पर आधारित उद्योग जिनका उद्देश्य लाभ प्राप्त करने के स्थान पर आजीविका चलाना होता है।

विनिर्माण के आधार पर- विनिर्माण के आधार पर उद्योगों का कच्चे माल के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है।

विनिर्माण के आधार पर
- कृषि आधारित उद्योग
- खनिज आधारित उद्योग
- वनोत्पाद आधारित उद्योग
- इंजीनियरिंग / तकनीकी उद्योग
- रासायनिक उर्वरक उद्योग

★ राजस्थान या भारत में खनिज आधारित उद्योग सर्वाधिक।

I. **कृषि आधारित उद्योग-**
1. सूती वस्त्र उद्योग
2. चीनी उद्योग
3. ऊन उद्योग
4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग
5. डेयरी उद्योग
6. बायोडिजल
7. जैतून तेल उद्योग

1. **सूती वस्त्र उद्योग-** (कच्चा माल - कपास)
↳ प्रथम सूती वस्त्र मिल - 'दी कृष्णा कॉटन मिल'

- स्थापना- 1889 (ब्यावर, अजमेर)
- संस्थापक- सेठ दामोदर दास राठी एवं कर्नल डिक्सन

सार्वजनिक सूती वस्त्र उद्योग

- 1st एडवर्ड (ब्यावर-1906)
- विजयनगर (ब्यावर)
- महालक्ष्मी (ब्यावर) (1925)

राजस्थान की सहकारी सूती वस्त्र मिलें

- राजस्थान सहकारी कताई मिल, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा - 1965) → (प्रथम सहकारी सूती वस्त्र मिल)
- गंगापुर सहकारी कताई मिल, (भीलवाड़ा, 1981)
- श्रीगंगानगर सहकारी कताई मिल (हनुमानगढ़ - 1978)
- गुलाबपुरा स्पिनिंग & जिनिंग सहकारी मिल

SPINFED (स्पिनफैड)- Rajasthan State Cooperative Spinning & Ginning Mills federation Ltd.

स्थापना- 1 अप्रैल, 1993

यह सहकारी सूती वस्त्र मिलों का संघ है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

1. सूती वस्त्र उद्योग कृषि आधारित सबसे बड़ा उद्योग।
2. यह एक परम्परागत उद्योग है।
3. महिलाएँ इस उद्योग में सर्वाधिक कार्यरत है।

- **महाराजा उम्मेद मिल्स लिमिटेड-** (पाली)
  → 1939 (राजस्थान की सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल)

NOTE:- भीलवाड़ा को 'राजस्थान का मैनचेस्टर'/ वस्त्रनगरी/ टैक्सटाइल सिटी कहा जाता है।

उभरता हुआ वस्त्र नगर- भिवाड़ी

२. चीनी उद्योग-

(कच्चा माल- गन्ना एवं चुकन्दर)

राजस्थान में चीनी मिलें

- मेवाड़ शुगर मिल
  - १९३२ (चित्तौड़)
  - प्रथम निजी चीनी मिल
- उदयपुर शुगर मिल (1976)
- गंगानगर शुगर मिल (1937) श्री गंगानगर
  - ↓ प्रथम- सार्वजनिक चीनी मिल (1956)
- केशोरायपाटन शुगर मिल (1965 बूंदी)
  - ↓ प्रथम- सहकारी चीनी मिल

NOTE:- गंगानगर शुगर मिल एकमात्र शुगर मिल है जहाँ 1968 में चुकन्दर व गन्ने से चीनी बनाई गई। वर्तमान में यह बन्द है। जिसके द्वारा वर्तमान में निम्नलिखित उपक्रमों का संचालन किया जा रहा है, →

गंगानगर शुगर मिल

- देशी शराब का निर्माण
- हैरिटेज लिकर का निर्माण (जयपुर)
- दी हाइटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री (धौलपुर)
- सैनिटाइजर का निर्माण

3. ऊन उद्योग :- [आधार- पशु सम्पदा (भेड़, ऊँट)]

ऊन उत्पादन सर्वाधिक (२०२२-२३ के अनुसार) – 1. राजस्थान (47.98 %)
२. J&K

प्रमुख ऊन उद्योग-

1. केन्द्रीय ऊन बोर्ड - जोधपुर

ऊन कॉम्पलैक्स
↓
1. खारा (बीकानेर)
2. ब्यावर
3. नरबदखेड़ा
4. गुहाना (ब्यावर)

2. राजस्थान में सर्वाधिक ऊन उत्पादन - जोधपुर
3. राजस्थान में सबसे बड़ी ऊन मण्डी - बीकानेर
4. वूल टेस्टिंग प्रयोगशाला - बीकानेर
5. स्टेट वूल मिल - बीकानेर
6. ऊन प्रशिक्षण केन्द्र - जयपुर
7. केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र - अविकानगर (टोंक)
8. वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स - लाडनूं (डीडवाना-कुचामन) एवं चूरू

4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग-

- राजस्थान में प्रथम वनस्पति घी फैक्ट्री - भीलवाड़ा (स्थापना-1964)
- वर्तमान में वनस्पति घी का सर्वाधिक उत्पादन - जयपुर
- सरसों तेल का सर्वाधिक उत्पादन - जयपुर
- सरसों तेल के प्रमुख कारखानें -
  - चम्बल - जयपुर
  - वीर बालक - जयपुर
  - नेताजी - जयपुर
  - ईंजन मार्का - भरतपुर

5. डेयरी उद्योग-

राजस्थान में डेयरी उद्योग का सर्वाधिक विकास - जयपुर में

राजस्थान राज्य डेयरी विकास निगम - 1975 (जयपुर)

↳ विश्व बैंक के सहयोग से।

Springboard ACADEMY

डेयरी विकास के लिए राज्य में त्रिस्तरीय ढाँचा बनाया गया-

शीर्ष	जिला स्तर पर-	ग्रामीण स्तर पर-
RCDF - 1977 राज. राज्य सहकारी संघ (जयपुर)	जिला दुग्ध सहकारी संघ - 24	प्राथमिक सहकारी दुग्ध समितियाँ- 19,054

RCDF (Rajasthan Co-operative dairy federation) को राजस्थान डेयरी विकास निगम के स्थान पर बनाया गया।

NOTE :-

➢ राजस्थान में संचालित प्रमुख डेयरी-

- राजस्थान की प्रथम डेयरी - पद्मा (अजमेर), 1938
- वरमूल (WRMUL) – Western Rajasthan Milk Union Ltd (जोधपुर)
- उरमूल (URMUL) – Uttari Rajasthan Milk Union Ltd. (बीकानेर)
- गंगमूल (Gangmul)– Ganganagar Milk Union Ltd. (हनुमानगढ़)
- कैमल मिल्क डेयरी - Ist = बीकानेर, 2009 (जोड़बीड़)
  IInd = जैसलमेर, 2021 (पोकरण)
- मेट्रो डेयरी - गोविंदगढ़ (जयपुर) ⟶ क्षमता- 11 लाख लीटर

➢ ऊँटनी के दुग्ध विपणन का केन्द्र जयपुर में स्थापित किया गया है।
क्षमता - 21000 लीटर / day

6. बायोडीजल-

- कच्चा माल - रतनजोत / जैट्रोफा एवं करंज
- बायोडीजल रिफाइनरी - कलड़वास (उदयपुर)
- बायोडीजल प्लांट - झामर कोटड़ा (उदयपुर)

7. जैतून तेल/ ऑलिव ऑयल-

- कच्चा माल- जैतून
- जैतून रिफाइनरी - लूणकरणसर (बीकानेर)

> नोट :- ऑलिव टी-प्लांट बस्सी- जयपुर (सहयोग - इजराइल) में स्थापित किया गया है।

II. खनिज आधारित उद्योग-

- सीमेंट उद्योग
- काँच उद्योग
- नमक उद्योग
- मार्बल उद्योग
- ग्रेनाइट उद्योग
- अभ्रक उद्योग

1. सीमेंट उद्योग- [सर्वाधिक सीमेंट उत्पादन - चित्तौड़गढ़ (निम्बाहेड़ा)]

- कच्चा माल - चूना पत्थर, जिप्सम व सिलिका
- प्रथम सीमेंट फैक्ट्री - ACC (एसोसिएट सीमेंट कम्पनी) लाखेरी (बूंदी)
- स्थापना - 1915 ई. (उत्पादन 1917 ई.) (सहयोग- क्लिक निक्सन)

सफेद सीमेंट फैक्ट्री-

1. J.K व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - गोटन (नागौर), 1984
2. J.K व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - मांगरोल (चित्तौड़)
3. बिरला व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - खारियाखंगार (जोधपुर)

सीमेंट उत्पादन की प्रमुख इकाईयाँ-

- J.K सीमेंट फैक्ट्री - निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
- अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़
- चेतक सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़
- वंडर सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़

Springboard Academy

- ✓ लाफार्ज सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़
- ✓ एसोसिएट सीमेंट फैक्ट्री - लाखेरी (बूँदी)
- ✓ बांगड़ सीमेंट फैक्ट्री - पाली
- ✓ श्री सीमेंट फैक्ट्री = ③ → श्री गंगानगर, झुंझुनूं, ब्यावर
- ✓ श्री राम सीमेंट फैक्ट्री - श्री राम नगर (कोटा)
- ✓ ग्रासिम सीमेंट फैक्ट्री - कोटपुतली - बहरोड़
- ✓ मंगलम सीमेंट फैक्ट्री - मोड़क (कोटा)
- ✓ जयपुर सीमेंट फैक्ट्री - सवाई माधोपुर
- ✓ अम्बुजा सीमेंट फैक्ट्री - • रावड़ियावास (ब्यावर) → पहले पाली में स्थित।
  • मारवाड़ - मुंडवा (नागौर)
- ✓ बिनानी सीमेंट फैक्ट्री - पिंडवाड़ा (सिरोही)
- ✓ J & K लक्ष्मी सीमेंट फैक्ट्री - सिरोही

3. काँच उद्योग - कच्चा माल - सिलिका सैंड, सोडियम सल्फेट, शोरा (पोटेशियम नाइट्रेट)

राजस्थान में काँच उद्योग का सर्वाधिक विकास - धौलपुर व अलवर

प्रमुख काँच फैक्ट्री

धौलपुर
- धौलपुर ग्लास फैक्ट्री
- दी हाइटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री

कोटा
- सेमकोर ग्लास फैक्ट्री (दक्षिणी कोरिया)

अलवर
- सेंट गोबेन ग्लास फैक्ट्री (भिवाड़ी, खैरथल - तिजारा)

3. नमक उद्योग - • प्रमुख स्रोत - महासागरीय जल एवं खारे पानी की झील

• इस उद्योग का प्रमुख आधार राजस्थान में खारे पानी की झीलें हैं।

Springboard ACADEMY

नमक उद्योग

- सांभर (जयपुर) → संचालन = हिन्दुस्तान सॉल्ट लिमिटेड द्वारा
  (सर्वाधिक नमक उत्पादन)
- पचपदरा (बालोतरा)
  (सर्वश्रेष्ठ श्रेणी का नमक)
- डीडवाना (नागौर)
  (निम्नतम श्रेणी का नमक)

4. मार्बल उद्योग-

- मार्बल उद्योग में राजस्थान का प्रथम स्थान है।
- राजसमंद मे सर्वाधिक मार्बल उत्पादन।
  - ↳ सर्वाधिक मार्बल प्रोसेसिंग इकाईयाँ
- किशनगढ़ (अजमेर) मार्बल मण्डी का सबसे बड़ा विपणन केन्द्र।
- राजस्थान का सफेद मार्बल (मकराना, डीडवाना कुचामन) विश्व प्रसिद्ध माना जाता है।

5. ग्रेनाइट उद्योग-

इस पत्थर का उत्पादन सर्वाधिक राजस्थान के जालोर, बाड़मेर सिरोही क्षेत्र से होता है।

- जालोर को राजस्थान में ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।

6. अभ्रक उद्योग-

- राजस्थान में अभ्रक ईंट बनाने का कारखाना - भीलवाड़ा
- भीलवाड़ा का अभ्रक / माईका सिटी भी कहा जाता है।
- उपयोग- अभ्रक से इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाए जाते है।

Springboard ACADEMY

III. वनोत्पाद आधारित उद्योग–

उत्पाद	वनस्पति / वृक्ष	क्षेत्र
• नक्काशीदार फर्नीचर	सागवान / रोहिड़ा	बाड़मेर एवं जोधपुर
• खाद्य गोंद	कूमट वृक्ष	चौहटन (बाड़मेर)
• टसर रेशम (कार्यक्रम - 1986)	शहतूत	उदयपुर, बांसवाड़ा, कोटा
• बीड़ी	तेंदू पत्ता	अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक (मयूर बीड़ी)
• कत्था	खैर	उदयपुर, चित्तौड़
• औषधि एवं शराब	महुआ	डूंगरपुर, बांसवाड़ा

IV. इंजीनियरिंग या तकनीकी उद्योग–

उद्योग	उत्पाद	स्थान
नेशनल इंजीनियरिंग कम्पनी	बॉल एवं बेरिंग	जयपुर
जयपुर मेटल्स	बिजली के मीटर	जयपुर
केप्सटन मीटर	पानी के मीटर	जयपुर, पाली
राजस्थान इले० कॉर्पोरेशन	टी.वी	जयपुर
मान इण्डस्ट्रीज	लोहे के दरवाजे एवं टॉवर निर्माण	जयपुर
REIL -(Rajasthan electronics & Instruments Ltd.)	नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्र & सॉफ्टवेयर	- कनकपुर (जयपुर)
हीरो मोटोकॉर्प	मोटर साईकिल	• कूकस (जयपुर) • नीमराणा (कोटपुतली बहरोड़)
केबल इण्डस्ट्रीज	केबल	कोटा

इस्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड	यंत्र/ मशीन	कोटा
J & K इलेक्ट्रॉनिक्स	टी.वी.	कोटा
फ्लोर्सपार संयंत्र	लोहे के साथ मिलाकर संयत्र निर्माण	डूँगरपुर
सिमको (Cimmco - Central India Machinery Manufacturing Company Ltd. (1957)	रेलवे	भरतपुर

V. रासायनिक उर्वरक उद्योग-

- चम्बल फर्टिलाइजर्स एवं केमिकल्स – गड़ेपान (कोटा)
- राष्ट्रीय केमिकल्स एवं फर्टिलाइजर्स (DAP - डाई-अमोनियम फॉस्फेट) – कपासन (चित्तौड़गढ़)
- राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स - डीडवाना (नागौर) - 1964
- पाइराइट एण्ड फॉस्फेट लिमिटेड – सलादीपुरा (सीकर)

स्वामित्व के आधार पर

- निजी उद्योग – व्यक्तिगत आधार
- सार्वजनिक उद्योग – सरकार का अधिकार
- सहकारी उद्योग – व्यक्तिगत एवं सरकार दोनों का अधिकार

Springboard Academy

सार्वजनिक उद्योग

1. केन्द्र सरकार के उपक्रम - 7

2. राज्य सरकार के उपक्रम - 23
   - 6 वैधानिक बोर्ड
   - 17 कम्पनी अधिनियम

1. केन्द्र सरकार के उपक्रम-

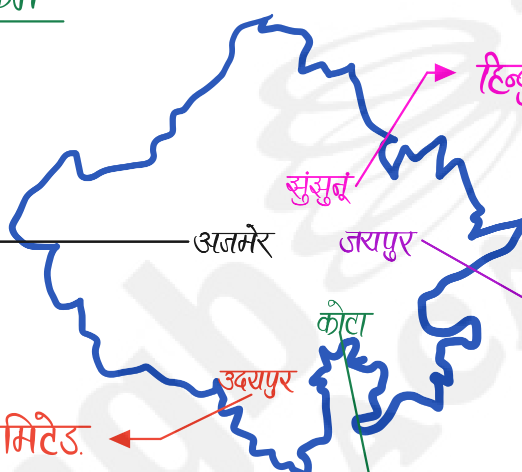

- हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड - 1967 (झुंझुनूं)
- हिन्दुस्तान मशीन लिमिटेड (HMT) (अजमेर)
- जयपुर:
  - हिन्दुस्तान साल्ट लिमिटेड जयपुर - 1964
  - माडर्न बेकरी (निजीकरण), 1965
  - ड्रग्स व फार्मास्युटिकल्स, 1978
- इन्स्ट्रूमेंटेशन - 1964 (कोटा)
- हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड देबारी, उदयपुर (1966)

2. राज्य सरकार के उपक्रम-

वैधानिक बोर्ड- 6

1955 → राजस्थान वित्त निगम
1957 → कृषि भण्डारण निगम
1 Oct. 1964 → राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC)
1970 → राजस्थान राज्य हाउसिंग बोर्ड निगम (RHB)
1974 → राज्य कृषि विपणन बोर्ड
1975 → राज्य भूमि विकास निगम

Springboard Academy

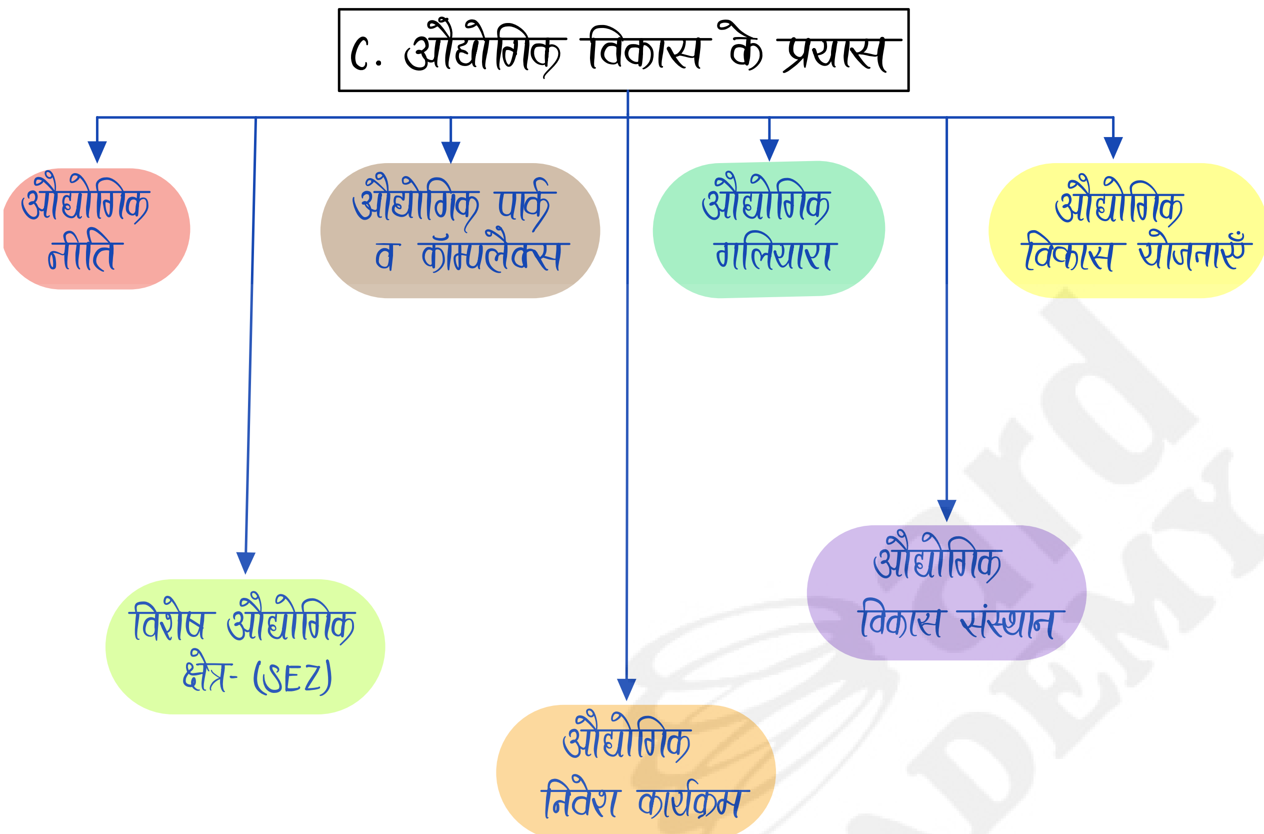

Springboard ACADEMY

I. राजस्थान में औद्योगिक नीतियाँ-

सामान्य नीतियाँ
- 1978 (प्रथम)
- 1991
- 1994
- 1998
- 2010
- 1 जुलाई २019
- NOTE- वस्त्र एवं परिधान (टेक्सटाइल & अपैरल पॉलिसी) - अप्रेल २०२५

MSME नीति
(Micro Small Medium Enterprises Policy)
- २० नवम्बर, 2015
- 17 सितम्बर, २०२२
- ९ दिसम्बर, २०२४

हैंडीक्राफ्ट/ हस्तशिल्प नीति
- 17 सितम्बर, २०२२

II. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)- क्रियान्वयन- RIICO द्वारा
→ राजस्थान में सर्वाधिक SEZ जयपुर में स्थित है।

प्रमुख सेज	संबंधित क्षेत्र	जिला / स्थिति
बोरानाडा सेज	दस्तकारी, हैण्डीक्राफ्ट	जोधपुर (मानसरोवर)
सीतापुरा सेज	जेम्स & ज्वैलरी	जयपुर
महिन्द्रा सेज	आई.टी. हैण्डीक्राफ्ट	जयपुर (कलवाड़ा)
सोमानी सेज	हार्डवेयर एण्ड सॉफ्टवेयर	खैरथल-तिजारा
RNB सेज	टैक्सटाईल	बीकानेर
वाटिका सेज (प्रस्तावित)	I.T	जयपुर

Springboard Academy

III. औद्योगिक पार्क एवं कॉम्पलैक्स-

1. जापानी पार्क (जेट्रो) → (JETRO - Japan External Trade Organization)	1. नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़) 2. घिलोट (कोटपुतली-बहरोड़)
2. कोरियन पार्क → (KOTRA - Korea Trade Investment Promotion Agency)	घिलोट (कोटपुतली-बहरोड़)
3. सिरेमिक जोन →	घिलोट
4. एग्रो फूड पार्क (राज्य सरकार) →	श्रीगंगानगर, जोधपुर, कोटा, अलवर
5. मेगा फूड पार्क (केन्द्र सरकार) →	रूपनगढ़ (अजमेर) प्रस्तावित - मथानिया (जोधपुर) पलाना (बीकानेर)
6. सूचना तकनीकी पार्क (I.T पार्क) →	जयपुर, कोटा, उदयपुर, जोधपुर
7. मसाला पार्क (Spice Park) →	1st - मथानिया, जोधपुर, 2nd - रामगंज मण्डी, कोटा
8. परिधान पार्क / अपैरल पार्क →	जगतपुरा (महल रोड), जयपुर
9. स्टोन पार्क →	मण्डोर (जोधपुर), मासलपुर (करौली), विसनौदा (धौलपुर) मण्डाना (कोटा)
10. साफ्टवेयर पार्क →	कनकपुरा (जयपुर)
11. पुष्प पार्क →	खुशखेड़ा (खैरथल-तिजारा)
12. होजरी पार्क →	चौपंकी (खैरथल-तिजारा)

Springboard Academy

13. निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क →	सीतापुरा (जयपुर), बोरानाडा (जोधपुर), नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़)
14. सिरेमिक पार्क →	सोनियाणा (चित्तौड़गढ़)
15. स्टोनपार्क →	निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़), बूंदी
16. खिलौना पार्क →	कोटा
17. फार्मापार्क →	DMIC (दिल्ली मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर)
18. मेड टेक मेडिकल डिवाइसेज पार्क →	बोरानाडा (जोधपुर)
19. इंटीग्रेटेड रिसोर्स रिकवरी पार्क →	जयपुर
प्रस्तावित पार्क (बजट २०२५-२६) →	• एग्रोफूड पार्क–सांचौर (जालौर) • मिनी एग्रो पार्क - अनूपगढ़, श्री गंगानगर

NOTE - देश का प्रथम निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क – सीतापुरा, जयपुर (1997)

कॉम्पलैक्स –

1. ऊन कॉम्पलैक्स →	खारा (बीकानेर), ब्यावर, गोहना (ब्यावर) नरबदखेड़ा (ब्यावर)
2. सिरेमिक कॉम्पलैक्स →	खारा (बीकानेर)
3. लेदर कॉम्पलैक्स →	मानपुरा माचेड़ी (जयपुर-ग्रामीण)
4. पेट्रो कॉम्पलैक्स →	बालोतरा

Springboard Academy

IV. औद्योगिक निवेश कार्यक्रम –

1. रिसर्जेंट राजस्थान → (2008)
2. रिसर्जेंट राजस्थान → (Nov. 2015)
3. निवेश/ इन्वेस्ट राजस्थान समिट → (7 oct. 2022)
4. राईजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट (9-10-11 dec. 2024)

राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट सम्मिट- आयोजन – जयपुर JECC (Jaipur Exhibition and Convention Centre)

- राइजिंग राजस्थान की थीम = Replete, Responsible, Ready (R_3)
- राइजिंग राजस्थान उद्देश्य – अगले 5 वर्षों में राजस्थान को 350 B$ की अर्थव्यवस्था बनाना।

> **नोट:-** निवेश कार्यक्रम का आयोजन करवाने वाली नोडल एजेंसी – BIP (ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टमेंट प्रमोशन)
> - गठन – 1991
> - उद्देश्य – 10 करोड़ से अधिक के औद्योगिक निवेश

(V) दिल्ली मुम्बई-इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर –

वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडॉर –
- 1504 कि.मी.
- दादरी (U.P) से JLN पोर्ट (मुम्बई)
- 38% (लम्बाई लगभग – 570 कि.मी) राजस्थान से गुजरता है (कुल 6 राज्य व U.T से)
- सहायता – जापान
- उद्देश्य – औद्योगिक निर्यात को बढ़ावा देना।

DMIC के दोनों तरफ 150 कि.मी. की पट्टी को DMIC के रूप में विकसित किया जायेगा, जिसमें 24 औद्योगिक क्षेत्र एवं 8 औद्योगिक निवेश क्षेत्र बनाए जायेंगे, जिसमें से राजस्थान में—

निवेश क्षेत्र

(i) अजमेर - किशनगढ़

(ii) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराना

> 28 Dec. 2020 को 'विशेष निवेश क्षेत्र' के रूप मे अधिसूचित

औद्योगिक क्षेत्र

(i) जयपुर - दौसा औद्योगिक क्षेत्र

(ii) राजसमंद - भीलवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र

(iii) जोधपुर - पाली - मारवाड़

(RIICO की जिम्मेदारी)

> 12 Oct 2020 को 'विशेष निवेश क्षेत्र' के रूप मे अधिसूचित

→ राजस्थान मे DMIC का प्रथम चरण-

(a) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराना (165 कि.मी²)

(b) जोधपुर - पाली - मारवाड़ (154 कि.मी²)

इनके विकास हेतु एक संयुक्त स्पेशल पर्पज व्हीकल कंपनी – "राजस्थान इंडस्ट्रीयल डवलपमेंट कॉरपोरेशन" (RIDCO) की स्थापना – 15 मार्च, 2022

NOTE- प्रथम चरण में पूर्णतः राजकीय भूमि (Gov. Land) शामिल है।

VI. औद्योगिक संस्थान

RFC	RAJSICO	RIICO	RUDA
1955	3 जून, 1961	1969	1995
(जयपुर)	(जयपुर)	(जयपुर)	(जयपुर)

(a) RFC (Rajasthan financial Corporation / राज्य वित्त निगम-

- स्थापना - जनवरी, 1955
- मुख्यालय - जयपुर
- उद्देश्य- अतिलघु, लघु एवं मध्यम उद्योगों को अल्पकालीन ऋण उपलब्ध करवाना |(ऋण राशि 2000-20 करोड़)

RFC की योजनाएँ-

(i) फ्लैक्सी ऋण योजना- इस योजना के तहत (MSME) अतिलघु, लघु व मध्यम उद्योगों को सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध करवाना।

(2) टॉप-अप योजना- अतिलघु उद्योगों को तकनीकी व मशीनरी विकास के लिए ऋण उपलब्ध करवाने की योजना |

(3) सैमफैक्स योजना / SEMFEX SCHEME-

(Self Employed for Ex-Serviceman Scheme)

➜ भूतपूर्व सैनिकों को उद्योग स्थापित करने के लिए सहयोग करने वाली योजना।

> नोट:- RFC के द्वारा विश्वसनीय ऋणियों को सिल्वर, गोल्ड, प्लेटिनम कार्ड जारी किया जाता है।

Springboard ACADEMY

(b) राजसीको (RAJSICO- Rajasthan Small Industries Corporation Limited)

स्थापना- जून, 1961

मुख्यालय - जयपुर

➡ उद्देश्य-
- आदिवासी क्षेत्रों में प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।
- लघु उद्योगो को कच्चा माल, मशीनरी व तकनीकी सुविधा उपलब्ध करवाना।
- राजसीको लघु उद्योगो से उत्पादित माल के विपणन का कार्य करता है।

(c) रीको (Riico- Rajasthan State Industrial development and Investment Corporation Limited)

➡ स्थापना- 28 मार्च, 1969 (पुनर्गठन -1 जनवरी 1980)

➡ मुख्यालय- जयपुर

➡ उद्देश्य -
- मध्यम एवं वृहद उद्योगों को मध्यकालीन ऋण उपलब्ध करवाना।
- उद्योगों के लिए भूमि उपलब्ध करवाना।
- सेज कार्यक्रम का संचालन
- राजस्थान में उद्योगों की यह शीर्ष संस्था है।

(d) रूडा (RUDA- Rural Non-farm/Agriculture development Agency)

➡ स्थापना- 1995

➡ मुख्यालय- जयपुर

➡ उद्देश्य- गैर कृषि क्षेत्रों में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।

➡ रूडा के प्रशिक्षण क्षेत्र- ऊन एवं वस्त्र उद्योग, चमड़ा उद्योग, लघु व गौण खनिज संबंधित होते हैं।

VII. औद्योगिक विकास योजनाएँ-

(a) एसाईड योजना-

- औद्योगिक निर्यात को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई योजना।
- शुरुआत- मार्च, 2002

(b) मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना-

शुरुआत- 2013

- उद्देश्य- इस योजना के तहत हस्त आधारित व दस्तकारों को स्वयं का उद्योग स्थापित करने के लिए 10 लाख रु तक ऋण उपलब्ध करवाना।

(c) मुख्यमंत्री युवा उद्यमिता योजना-

- शुरुआत- 1 अप्रैल, 2013 (आदेश मार्च 2023 के अनुसार 31 जुलाई 2025 तक लागू)
- उद्देश्य- जिन युवाओं के पास लीक से हटकर उद्योग स्थापित करने की योजना है, उन्हें आर्थिक सहयोग व ऋण उपलब्ध करवाना।
- योग्यता-
  - आयु- 18-35 वर्ष
  - 10 वीं + ITI या ग्रेजुएट
- ऋण राशि- 25 लाख – 1 करोड़ (ऋण लौटाने की अवधि 7 वर्ष)

(d.) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना-

- शुरुआत - 17 dec. २०19 (प्रभावी- 31 मार्च, २०२५)
- योजना - लघु उद्योगों के ऋण पर ब्याज अनुदान संबंधित योजना।

	ऋण राशि	ब्याज अनुदान
1.	२5 लाख	8%
2.	२5 लाख- 5 करोड़.	6%
3.	5 करोड़. - 10 करोड़.	5%

★ डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजस्थान दलित, आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना-२०२२

- प्रारम्भ- 8 सितम्बर २०२२
- उद्देश्य- SC/ST वर्गों को गैर कृषि क्षेत्रों में उद्यम ऋण पर ब्याज अनुदान।

ऋण राशि	ब्याज अनुदान	
₹. २5 लाख तक	9%	उद्यम लागत का २5%
₹ २5 लाख - 5 करोड़. तक	7%	या ₹ २5 लाख
₹ 5 करोड़ - 10 करोड़. तक	6%	अनुदान राशि देय होगी।

D. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

(i) औद्योगिक विकास के लिए-

जिला स्तर पर - जिला उद्योग केन्द्र - 36

उपकेन्द्र - 8

(ii) सिंगल विण्डो क्लियरेंस एक्ट - २011

↳ संशोधित २०२०

(iii) ई- गवर्नेंस व IT नीति- नवम्बर २015

(iv) राज्य के विशेष औद्योगिक संस्थान-

- ✔ कम्प्यूटर एडेड कार्पेट (Carpet) डिज़ाइन सेंटर - जयपुर
- ✔ कम्प्यूटर एडेड टैक्सटाईल डिजाइन सेंटर - भीलवाड़ा
- ✔ ब्रह्मगुप्त अनुसंधान व विकास संस्थान - जोधपुर
- ✔ फुट वियर डिजाईन सेंटर - मंडोर (जोधपुर)
- ✔ NIFT (National Institute of fashion Technology) - जोधपुर
- ✔ सिरेमिक अनुसंधान व विकास केन्द्र - बीकानेर

(v) राजस्थान में निवेश प्रोत्साहन नीति-

- ✔ निवेश प्रोत्साहन नीति - २००३
- ✔ राजस्थान उद्योग व निवेश प्रोत्साहन नीति - २०१०
- ✔ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - २०१४
- ✔ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 17 dec. २०१९
- ✔ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - २०२२
- ✔ राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 8 अक्टूबर २०२४
  - └► उद्देश्य- • राज्य में सतत आर्थिक विकास और रोजगार को बढ़ावा देना।
    - • औद्योगिक विकास, नवाचार, पर्यावरणीय स्थिरता एवं हरित विकास को बढ़ावा देने पर केन्द्रित।

NOTE- राजस्थान में सर्वाधिक औद्योगिक निर्यात क्रमशः (२०२५)

1st इंजीनियरिंग/अभियांत्रिकी
२. जवाहरात व आभूषण
3. धातुएँ
4. कपड़ा

जनसंख्या

जनगणना का इतिहास-

- ✓ प्राचीन काल → अर्थशास्त्र = चाणक्य (मौर्य काल)
- ✓ मध्य काल → "आइने-अकबरी" = अबुल फज़ल (मुगल काल)
- ✓ आधुनिक काल → 1872 ई. लॉर्ड मेयो द्वारा आधुनिक जनगणना की शुरुआत।

NOTE :-
- 1881 में लॉर्ड रिपन के काल में व्यवस्थित और दशकीय जनगणना की शुरुआत हुई।
- जनगणना संघ सूची का विषय है।
- जनगणना संविधान की सातवीं अनुसूची में शामिल है।
- जनसंख्या जनगणना अधिनियम - 1948 में पारित।
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग - 11 मई, 2000
- जनगणना गृह मंत्रालय के जनगणना विभाग द्वारा करवाई जाती है।

जनगणना - 2011

- क्रमानुसार → 15th
- दशकीय/व्यवस्थित → 14th
- स्वतंत्रता के बाद → 7th
- 21वीं शताब्दी → 2nd

→ 15वीं जनगणना बजट - 2200 करोड़

Springboard Academy

- प्रति व्यक्ति लागत - 18.19 ₹
- 2011 की जनगणना में शामिल कुल जिले - 640 (राजस्थान - 33 जिले)
- जनगणना शुभंकर - प्रगणक शिक्षिका
- जनगणना आदर्श वाक्य - "हमारी जनगणना, हमारा भविष्य"

विशेष बिन्दु-

- राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर पहली बार बनाया गया है।
- प्रथम बार घरों की गणना
- किन्नरों को इस जनगणना में पहली बार शामिल किया गया।
- प्रथम पेपरलेस जनगणना।
- जातीय जनगणना दूसरी बार 2011 में की गई। (प्रथम बार- 1931)

2011 की जनगणना दो चरणों में सम्पन्न हुई-

- पहला चरण - 15 मई से 30 जून, 2010
- दूसरा चरण - 9 फरवरी - 28 फरवरी, 2011

1. कुल जनसंख्या-

भारत की कुल जनसंख्या - 121.085 करोड़

राजस्थान की कुल जनसंख्या - **6.85 करोड़**

(पुरुष - 51.86% एवं महिलाएँ - 48.14%)

(अधिकतम)
- जयपुर - 66.26 लाख
- जोधपुर - 36.87 लाख

(न्यूनतम)
- जैसलमेर - 6.69 लाख
- प्रतापगढ़ - 8.67 लाख

Springboard Academy

अलवर - 36.75 लाख	सिरोही - 10.36 लाख
नागौर - 33.07 लाख	बूँदी - 11.10 लाख
उदयपुर - 30.68 लाख	राजसमंद - 11.56 लाख

- राजस्थान में भारत की कुल जनसंख्या का 5.67 प्रतिशत और विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1% हिस्सा है।
- २011 के अनुसार, जनसंख्या की दृष्टि से 8 वां स्थान रखता है जबकि वर्तमान में भारत में 7 वां स्थान (आन्ध्रप्रदेश के विभाजन के कारण) रखता है।
- शिशु जनसंख्या (0-6 वर्ष) → राजस्थान की कुल जनसंख्या का 15.54% है।

२. कुल जनसंख्या वृद्धि दर-

किसी निश्चित स्थान पर निश्चित समय में (10 वर्ष) प्रति 100 व्यक्तियों पर होने वाली वृद्धि, 'जनसंख्या वृद्धि दर' कहलाती है।

जनसंख्या वृद्धि दर

सर्वाधिक	न्यूनतम
1. बाड़मेर - 32.5 प्रतिशत	1. श्री गंगानगर - 10 प्रतिशत
2. जैसलमेर - 31.8 प्रतिशत	2. झुंझुनूं - 11.7 प्रतिशत
3. जोधपुर - 27.7 प्रतिशत	3. पाली - 11.9 प्रतिशत
4. बांसवाड़ा - 26.58 प्रतिशत	4. बून्दी - 15.4 प्रतिशत

Springboard ACADEMY

ग्रामीण (19%) व नगरीय (29%) जनसंख्या वृद्धि दर

- **सर्वाधिक**
  - ग्रामीण
    1. जैसलमेर
    2. बाड़मेर
    3. बांसवाड़ा
  - नगरीय
    1. अलवर
    2. दौसा
    3. बारां
- **न्यूनतम**
  - ग्रामीण
    1. कोटा
    2. श्री गंगानगर
    3. झुंझुनूं
  - नगरीय
    1. डूंगरपुर
    2. प्रतापगढ़
    3. हनुमानगढ़

- राजस्थान में सर्वाधिक ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर 1911-21 (-6.29%) के दशक में रही।
  इसे "जनसंख्या विभाजक दशक" भी कहते है।

★ राजस्थान में 1911-21, के दशक में जनसंख्या घटने के कारण-

1. प्लेग महामारी (मुख्य कारण)
2. प्रथम विश्व युद्ध
3. राष्ट्रीय आन्दोलनों की शुरुआत

- राजस्थान में 1951 से 1981 के दशकों को 'जनसंख्या विस्फोटक दशक' कहा जाता है। जिसमें — राजस्थान की जनसंख्या की सर्वाधिक वृद्धि दर- 1971-81 (32.97%) बढी।
- 1991-2001 में राजस्थान की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की गई।
- जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारक- उच्च जन्म दर, न्यूनतम मृत्यु दर एवं आप्रवास।

Springboard Academy

3. **जनसंख्या घनत्व-** प्रति वर्ग कि.मी. में रहने वाली जनसंख्या।

↳ 2001 में राजस्थान का जनघनत्व 165 था.

जबकि 2011 में → **जनसंख्या घनत्व - 200/वर्ग कि.मी.**

सर्वाधिक

1. जयपुर - 595
2. भरतपुर - 503
3. दौसा - 476
4. अलवर - 438

न्यूनतम

1. जैसलमेर - 17
2. बीकानेर - 78
3. बाड़मेर - 92
4. चुरु - 147

100 से कम जनसंख्या घनत्व वाले जिले - जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर

★ मरुस्थलीय जिलों (पश्चिमी राजस्थान) में जनसंख्या घनत्व सबसे कम मिलता है।

4. **लिंगानुपात-** प्रति हजार पुरुषों की संख्या पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात कहा जाता है।

कुल औसत लिंगानुपात = 928

सर्वाधिक

- डूंगरपुर - 994
- राजसमंद - 990
- पाली - 987
- प्रतापगढ़ - 983

न्यूनतम

- धौलपुर - 846
- जैसलमेर - 852
- करौली - 861
- भरतपुर - 880

2001 (921) की तुलना में 2011 (928) में 7 अंकों की बढ़ोतरी हुई।

Springboard ACADEMY

राज्य में लिंगानुपात

ग्रामीण - 933

सर्वाधिक
1. पाली - 1003
2. राजसमंद - 998
3. डूँगरपुर - 996

न्यूनतम
1. धौलपुर - 841
2. करौली - 856
3. जैसलमेर - 859

शहरी - 914

सर्वाधिक
1. टोंक - 985
2. बांसवाड़ा - 964
3. प्रतापगढ़ - 963

न्यूनतम
1. जैसलमेर - 807
2. धौलपुर - 864
3. अलवर - 872

2011 में शिशु लिंगानुपात - 888

सर्वाधिक
- बांसवाड़ा - 934
- प्रतापगढ़ - 933
- भीलवाड़ा - 928
- उदयपुर - 924

न्यूनतम
- झुंझुनूं - 837
- सीकर - 848
- करौली - 852
- श्री गंगानगर - 854

NOTE- राजस्थान में 2001 में शिशु लिंगानुपात 909 था जिसमें 2011 में (909-888) 21 अंको की कमी हुई।

राज्य में शिशु लिंगानुपात

ग्रामीण - 892

सर्वाधिक
1. बाँसवाड़ा - 937
2. प्रतापगढ़ - 936
3. भीलवाड़ा - 933

न्यूनतम
1. झुंझुनूं - 832
2. सीकर - 843
3. करौली - 850

शहरी - 874

सर्वाधिक
1. नागौर - 907
2. बीकानेर - 906
3. भीलवाड़ा - 905

न्यूनतम
1. धौलपुर - 851
2. गंगानगर - 852
3. दौसा - 857

NOTE :- ➤ राजस्थान के सभी जिलों में लिंगानुपात 1000 से कम है।

➤ राजस्थान का औसत लिंगानुपात (928) भारत के औसत लिंगानुपात (943) से **कम** है।

➤ राजस्थान में सामान्य लिंगानुपात में औसत लिंगानुपात से कम वाले जिले = 15

➤ राजस्थान में शिशु लिंगानुपात से औसत शिशु लिंगानुपात से कम वाले जिले = 12

न्यूनतम और अधिकतम लिंगानुपात के पीछे कारण

सर्वाधिक

- प्रति व्यक्ति कम आय।
- तकनीकी ज्ञान एवं सुविधा कम होना।
- कम साक्षरता दर
- संयुक्त परिवार
- दहेज प्रथा प्रचलित नही

न्यूनतम

- प्रति व्यक्ति अधिक आय
- तकनीकी सुविधा एवं जानकारी अधिक होना।
- उच्च साक्षरता दर
- एकल परिवार
- दहेज प्रथा का प्रचलन

5. साक्षरता - "6 वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति जो किसी भी भाषा को पढ़ने या लिखने में सक्षम हो उसे 'साक्षर' कहा जाता है।"

2011 में साक्षरता दर - 66.1 प्रतिशत

2001 में साक्षरता दर = 60.41 %

सर्वाधिक

कोटा - 76.6 %
जयपुर - 75.5 %
झुंझनुं - 74.1 %
सीकर - 71.9 %

न्यूनतम

जालौर - 54.9 %
सिरोही - 55.3 %
प्रतापगढ़ - 56.0 %
बांसवाड़ा - 56.3 %

राजस्थान में पुरुष साक्षरता दर= 79.2%

सर्वाधिक

1. झुन्झुनूं = 86.9%
2. कोटा = 86.3%
3. जयपुर = 86.1%
4. सीकर = 85.1%

न्यूनतम

1. प्रतापगढ़ = 69.5%
2. बांसवाड़ा = 69.5%
3. सिरोही = 70.0%
4. जालौर = 70.7%

राजस्थान में महिला साक्षरता दर= 52.1%

सर्वाधिक

1. कोटा 65.9%
2. जयपुर 64.0%
3. झुंझुनूं 61.0%
4. गंगानगर 59.7%

न्यूनतम

1. जालौर 38.5%
2. जैसलमेर 39.7%
3. सिरोही 39.7%
4. बाड़मेर 40.6%

ग्रामीण एवं शहरी साक्षरता

ग्रामीण 61.4 प्रतिशत

- पुरुष 76.2%
- महिला 45.8%

शहरी 79.7 प्रतिशत

- पुरुष 87.9%
- महिला 70.7%

Springboard ACADEMY

	सर्वाधिक	न्यूनतम
ग्रामीण साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही
ग्रामीण पुरुष साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही
ग्रामीण महिला साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही

	सर्वाधिक	न्यूनतम
शहरी साक्षरता	उदयपुर	नागौर
शहरी पुरुष साक्षरता	उदयपुर	धौलपुर
शहरी महिला साक्षरता	उदयपुर	जालौर

- बाड़मेर और चुरु में साक्षरता दर में कमी आई है, शेष सभी ने साक्षरता दर में वृद्धि हुई है।
- देश में पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच का अन्तर सर्वाधिक है।
- राजस्थान में औसत साक्षरता (66.1%) से कम साक्षरता वाले जिले = 19

6. <u>ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या</u>-

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

- ग्रामीण 5.15 करोड़
  - सर्वाधिक
    1. जयपुर
    2. अलवर
    3. नागौर
    4. उदयपुर
  - न्यूनतम
    1. जैसलमेर
    2. कोटा
    3. प्रतापगढ़
    4. सिरोही
- शहरी 1.70 करोड़
  - सर्वाधिक
    1. जयपुर
    2. जोधपुर
    3. कोटा
    4. अजमेर
  - न्यूनतम
    1. प्रतापगढ़
    2. डूंगरपुर
    3. जैसलमेर
    4. बांसवाड़ा

Springboard Academy

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

- ग्रामीण 75.1 प्रतिशत
  - सर्वाधिक प्रतिशत (डूंगरपुर)
  - न्यूनतम प्रतिशत (कोटा)
- शहरी २४.९ प्रतिशत
  - सर्वाधिक प्रतिशत (कोटा)
  - न्यूनतम प्रतिशत (डूंगरपुर)

राजस्थान के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति–

अनुसूचित जनजाति (13.5%)
(कुल जनसंख्या = (९२.38 लाख)

ST लिंगानुपात ९४८

सर्वाधिक जनसंख्या

1. उदयपुर
२. बांसवाड़ा
3. डूँगरपुर

न्यूनतम जनसंख्या

1. बीकानेर
२. नागौर
3. चुरु

सर्वाधिक प्रतिशत

1. बांसवाड़ा
२. डूँगरपुर
3. प्रतापगढ़

न्यूनतम प्रतिशत

1. नागौर
२. बीकानेर
3. चुरु

→ ST २४% से अधिक = 5 जिलों में (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, उदयपुर)

→ ST 50% या 60% से अधिक = 3 जिले (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़)

Springboard Academy

अनुसूचित जाति (17.8 %)
(कुल जनसंख्या = (1२२.२1 %)

SC लिंगानुपात ९२३

सर्वाधिक जनसंख्या
1. जयपुर
२. गंगानगर
3. नागौर

न्यूनतम जनसंख्या
1. डूँगरपुर
२. प्रतापगढ़
3. बांसवाड़ा

सर्वाधिक प्रतिशत
1. गंगानगर
२. हनुमानगढ़
3. करौली

न्यूनतम प्रतिशत
1. डूँगरपुर
२. बांसवाड़ा
3. उदयपुर

- SC, २5% से अधिक = २ जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़)
- २0% से अधिक = 1२ जिले

8. राजस्थान में विभिन्न धर्मों की जनसंख्या –

धर्म	प्रतिशत	सर्वाधिक जनसंख्या	सर्वाधिक प्रतिशत
हिन्दु	88.49	जयपुर	दौसा
मुस्लिम	9.07	जयपुर	जैसलमेर
सिक्ख	1.27	श्री गंगानगर	श्री गंगानगर
जैन	0.91	जयपुर	उदयपुर
ईसाई	0.14	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा
बौद्ध	0.02	अलवर	अलवर

NOTE-
- राजस्थान राज्य की जनसंख्या नीति - २0 जनवरी, २000
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति - 15 फरवरी, २000

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के उद्देश्य

- **तात्कालिक** → गर्भ निरोधक एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।
- **मध्यकालिक** → 2010 तक TFR (कुल प्रजनन दर) को 2.1 तक लाना।
- **दीर्घकालिक** → 2045 तक स्थिर जनसंख्या के लक्ष्य को प्राप्त करना।

Springboard ACADEMY

पर्यटन – परिपथ / सर्किट एवं स्थल

- परिचय
- पर्यटन आगमन
- पर्यटन परिपथ
- पर्यटन स्थल
- पर्यटन संस्थान
- पर्यटन नीति
- पर्यटन योजना

1. परिचय-

- पर्यटन को उद्योग का दर्जा मोहम्मद यूनुस समिति की सिफारिश पर 4 मार्च 1989 को दिया गया।
- राजस्थान में कुल पर्यटन सम्भाग :- 4

[जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, कोटा]

RAJASTHAN
The Incredible State of India !

पर्यटन विभाग का

- प्रतीकात्मक पशु → ऊँट
- स्लोगन → 'पधारो म्हारे देस'
- टैग लाइन → 'Rajasthan' The Incredible State of India.

२. पर्यटन आगमन

- राजस्थान में कुल पर्यटन आगमन = २०२३-२४ → 1807.52 लाख
  - घरेलू पर्यटक (1790.52 लाख)
  - विदेशी पर्यटक (17 लाख)

वृद्धि →	82.10 %	451.94 %

- राजस्थान में कुल पर्यटन आगमन = २०२४-२५ → २321.56 लाख
  - घरेलू पर्यटक (२300.84 लाख)
  - विदेशी पर्यटक (२0.72 लाख)

वृद्धि →	२8.50 %	२1.88 %

Springboard Academy

राजस्थान में पर्यटन आगमन का समय-

- सर्वाधिक
  - स्वदेशी — Oct.- dec.
  - विदेशी — Oct.- dec.
- न्यूनतम
  - स्वदेशी — Apr.- June
  - विदेशी — Apr.- June

पर्यटन आगमन स्थल-

- स्वदेशी
  - सीकर
  - चित्तौड़गढ़
  - अजमेर
- विदेशी
  - जयपुर
  - उदयपुर
  - जोधपुर

नोट - विदेशी पर्यटकों का सर्वाधिक आगमन - 1. USA 2. UK 3. फ्रांस 4. इटली

3. पर्यटन परिपथ

1.) पर्यटन सर्किट = 10	4.) वाईल्ड लाइफ सर्किट = 7
2.) पुरातात्विक सर्किट = 7	5.) ट्रायबल सर्किट = 4
3.) इको एडवेंचर सर्किट = 10	6.) आध्यात्मिक सर्किट = 4

(i) पर्यटन सर्किट-

- शेखावाटी सर्किट → झुन्झुनूं, चुरू, सीकर
- अलवर सर्किट → सिलीसेढ़ एवं सरिस्का
- भरतपुर सर्किट → भरतपुर, डीग, धौलपुर
- रणथम्भौर सर्किट → स॰ माधोपुर, टोंक

Springboard Academy

- हाड़ौती सर्किट → कोटा, बूंदी, झालावाड़
- ढूंढाड़ सर्किट → जयपुर- आमेर- रामगढ़
  दौसा - आभानेरी
- मरु त्रिकोण सर्किट → जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर
- मेरवाड़ा सर्किट → अजमेर - पुष्कर, नागौर - मेड़ता
- मेवाड़ सर्किट → उदयपुर - चित्तौड़
  कुम्भलगढ़ - नाथद्वारा
- माउंट आबू सर्किट → सिरोही - पाली (रणकपुर) और जालौर

NOTE- राजस्थान से संबंधित अन्य पर्यटन सर्किट

- प्रस्तावित
  ↓
  गोडवाड़ सर्किट
  ↓
  *पाली - जालौर - बाड़मेर - सिरोही
- स्वर्णिम त्रिकोण
  ↓
  जयपुर-दिल्ली- आगरा

२. पुरातात्विक सर्किट- (7)

1. बीकानेर पुरातात्विक सर्किट
2. जोधपुर पुरातात्विक सर्किट
3. अजमेर पुरातात्विक सर्किट
4. जयपुर पुरातात्विक सर्किट
5. भरतपुर पुरातात्विक सर्किट
6. उदयपुर पुरातात्विक सर्किट
7. कोटा पुरातात्विक सर्किट

3. इको एडवेंचर सर्किट-

शामिल जिले- 10

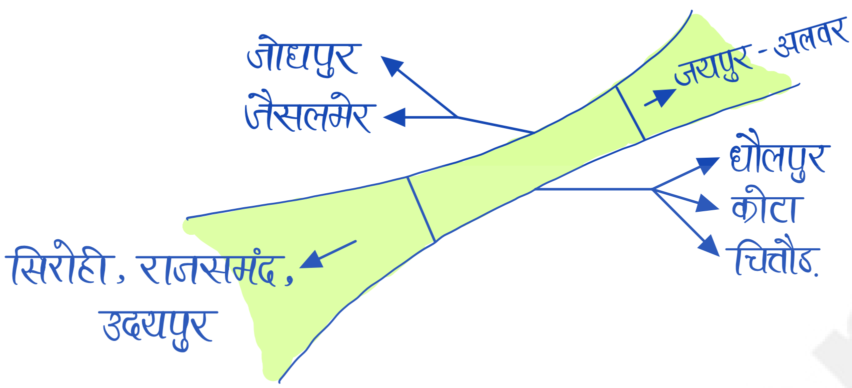

4. वाइल्ड लाइफ सर्किट-

शामिल जिले = 7

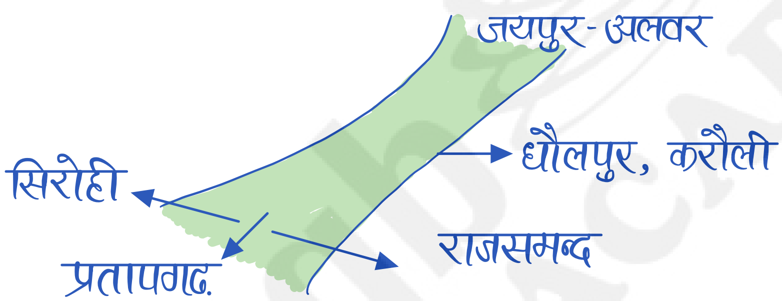

5. ट्राइबल सर्किट-

शामिल जिले = 4

- डूंगरपुर
- बांसवाड़ा
- प्रतापगढ़
- उदयपुर

6. आध्यात्मिक सर्किट-

- बुद्धा सर्किट → 2
- बालाजी सर्किट → 4
- तीर्थ सर्किट → 4
- कृष्णा सर्किट → 3

Springboard ACADEMY

* बुद्धा सर्किट-

- जयपुर - बैराठ
- झालावाड़ - कौल्वी गुफा

* बालाजी सर्किट-

- चुरू = सालासर
- जयपुर ग्रामीण = वीर हनुमान जी - सामोद
- दौसा = मेहन्दीपुर बालाजी
- अलवर = पांडूपोल (सरिस्का)

* तीर्थ सर्किट-

- अजमेर
- पुष्कर
- नाथद्वारा (राजसमंद)
- महावीर जी (करौली)

* कृष्णा सर्किट-

स्वदेश दर्शन योजना (2014-15) के तहत कृष्णा सर्किट में शामिल-

- राज्य → 5
  - राजस्थान
  - हरियाणा
  - U.P
  - गुजरात
  - ओडिशा
- स्थल → 12

NOTE- 3 Sites in Rajasthan

1. सीकर → खाटू श्याम जी
2. राजसमंद → श्री नाथ जी
3. जयपुर → गोविन्द देव जी, गलता जी, कनक वृन्दावन

Springboard ACADEMY

4. पर्यटन स्थल

ऐतिहासिक स्थल
- सभ्यता स्थल
- युद्ध भूमि

सांस्कृतिक स्थल
- धार्मिक स्थल
- पर्यटन महोत्सव एवं मेले
- प्रमुख दुर्ग एवं महल
- पर्यटन महोत्सव

भौगोलिक स्थल
- हिल स्टेशन
- नदियाँ – बाँध
- झीलें
- राष्ट्रीय पार्क व अभयारण्य

✱ प्रमुख पर्यटन महोत्सव –

जनवरी	
• ऊँट महोत्सव	→ बीकानेर
• जयपुर लिट्रेचर फेस्टिवल	→ डिग्गी पैलेस (जयपुर)
फरवरी	
• बेणेश्वर मेला	→ डूँगरपुर
• मरु महोत्सव	→ जैसलमेर
• उदयपुर वर्ल्ड म्यूजियम फेस्टिवल	→ उदयपुर
मार्च	
• ब्रज महोत्सव	→ भरतपुर
• धुलण्डी महोत्सव	→ होली के अगले दिन
• राजस्थान महोत्सव	→ २७ मार्च से 30 मार्च
अप्रैल	
• गणगौर उत्सव	→ जयपुर का प्रसिद्ध
• मेवाड़ महोत्सव	→ उदयपुर
मई	
• ग्रीष्म महोत्सव	→ माउण्ट आबू

Springboard Academy

उत्सव / मेला	स्थान
अगस्त	
• तीज उत्सव	→ जयपुर (श्रावण शुक्ल तृतीया)
• कजली तीज	→ बूँदी (भाद्रपद कृष्ण तृतीया)
अक्तूबर	
• राजस्थान कबीर यात्रा	→ बीकानेर
• आभानेरी उत्सव	→ दौसा
• मारवाड़ उत्सव (मांड उत्सव)	→ जोधपुर
अक्तूबर - नवम्बर	
• दशहरा उत्सव	→ कोटा
• पुष्कर उत्सव	→ अजमेर
• कोलायत मेला	→ बीकानेर
• मत्स्य महोत्सव	→ अलवर
• चन्द्रभागा महोत्सव	→ झालावाड़
• बूँदी उत्सव	→ बूँदी
दिसम्बर	
• कुम्भलगढ़ उत्सव	→ राजसमंद (1-3 दिसम्बर)
• रणकपुर उत्सव	→ पाली (२१-२२ दिसम्बर)
• शीतकालीन उत्सव	→ माउंट आबू (२९-30 dec.)

5. पर्यटन संस्थान

*** पर्यटन विभाग - 1956**

↳ पर्यटन विभाग द्वारा संचालित संस्थान -

- पर्यटन प्रबंधन संस्थान
  - जयपुर
  - जोधपुर
  - उदयपुर
- फूड क्राफ्ट संस्थान
  - अजमेर
  - सुमेरपुर (पाली)

Springboard Academy

NOTE- पर्यटन विभाग के स्वागत / सूचना केन्द्र -

राज्य में → ५२

राज्य के बाहर (5) → 1. दिल्ली 2. मुम्बई 3. चेन्नई 4. कोलकाता 5. अहमदाबाद

- पर्यटन विभाग के अधीन संचालित संस्थान - 4

1. राजस्थान राज्य होटल निगम - (RSHC)
   स्थापना - 7 जून 1965, जयपुर

2. RTDC - (Rajasthan tourism Development Corporation)
   - स्थापना - 1 अप्रैल 1979 (जयपुर)
   - उद्देश्य - पर्यटकों को आवास, भोजन एवं यातायात सुविधाएँ प्रदान करता है।

3. RITTMAN - (Rajasthan Institute of tourism & Travel Management)
   - राजस्थान पर्यटन एवं परिवहन संस्थान निगम
     स्थापना - २७ अप्रैल, 1996

4. राज्य मेला प्राधिकरण -
   - देवस्थान विभाग के अधीन 2011 में गठन।
   - दिसम्बर 2019 तक ५२ मेले पंजीकृत है।

NOTE - • राष्ट्रीय पर्यटन दिवस – २५ जनवरी
• विश्व पर्यटन दिवस – २७ सितम्बर

Springboard ACADEMY

6. पर्यटन नीतियाँ

पर्यटन नीति
- वर्ष 2001
- वर्ष 2007
- वर्ष 2015
- वर्ष 9 Sep.2020
- dec.2025 → **राजस्थान पर्यटन इकाई नीति**
  - लक्ष्य – • राज्य के सकल मूल्य वर्धन में पर्यटन का 2030 तक 8.5% का लक्ष्य।
    - 2030 तक राज्य के कुल रोजगार का पर्यटन क्षेत्र 13% रोजगार उपलब्ध करवाएगा।
    - 2030 तक घरेलू व विदेशी पर्यटकों में राजस्थान को IIIrd स्थान तक लाना।
    - पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र में 50,000 करोड़ नवीनतम निजी क्षेत्र के निवेश को लाना।
    - 2030 तक घरेलू पर्यटन को 25.19 करोड़ तक पहुँचाना।
    - 2030 तक विदेशी पर्यटन को 19.52 लाख तक पहुँचाना।

इको ट्यूरिज्म नीति या पारिस्थितिकी नीति
- 1st → 4 feb.2010
- 2nd → 15 July,2021

होटल नीति
- वर्ष 2006

पर्यटन संबंधी अन्य नीतियाँ

1. राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति 2022 :-
- लागू → 18 अप्रैल, 2022
- फिल्म डेस्टिनेशन / शूटिंग को बढ़ावा देने हेतु
- कुल उत्पादन लागत का 15% अनुदान या अधिकतम 2 करोड़ रु

7. पर्यटन संबंधी योजनाएँ

(i) पेइंग गेस्ट योजना-

➤ शुरुआत – 27 सितम्बर, 1991

➤ 2012 में इसे सम्पूर्ण राज्य में लागू कर दिया।

(ii) हेरिटेज होटल योजना-

➤ 1991 में भारत सरकार द्वारा हेरिटेज होटल की नवीन श्रेणी को मान्यता दी गई।

➤ **हेरिटेज के लिए आवश्यक शर्तें-**

(i) 50 वर्ष से पुरानी ईमारतों जैसे- किलों, महलों, हवेलियों एवं दुर्गों को बनाया जाता है।

(ii) हेरिटेज होटलों को सेवा एवं सुविधाओं के आधार पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है –
1. हेरिटेज
2. हेरिटेज क्लासिक
3. हेरिटेज ग्रैंड

NOTE :- राजस्थान में "अजीत भवन, जोधपुर" को प्रथम हेरिटेज होटल बनाया गया।

(iii) मेवाड़ काम्पलैक्स योजना-

महाराणा प्रताप की 400 वीं पुण्यतिथि (1997) पर उनके जीवन से संबंधी स्थानों (गोगुन्दा, चावण्ड, दिवेर, हल्दीघाटी) का पर्यटन की दृष्टि से विकास करना।

(iv) वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना–

➤ शुरुआत - 2013 (देवस्थान विभाग द्वारा)

(v) हृदय योजना-

(HRIDAY= Heritage city development & Augmentation Yojana)

- शुरुआत - 2015
- उद्देश्य - देश के राष्ट्रीय विरासत स्थलों के विकास एवं संवर्द्धन के लिए।

इस योजना में राजस्थान के अजमेर को शामिल किया गया है।

(vi) प्रसाद योजना-

(PRASHAD = Pilgrimage Rejuvenation & Heritage Spiritual Augmentation Drive)

- शुरुआत - जनवरी 2015
- पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा।
- उद्देश्य - तीर्थ स्थलों, आध्यात्मिक एवं विरासत स्थलों का परिवर्धन करना।
- इसके तहत राजस्थान के अजमेर-पुष्कर का विकास किया जायेगा।

(vii) पेइंग गेस्ट हाउस योजना-

- शुरुआत- 2 अक्टूबर 2021
- पेइंग गेस्ट हाउस के लिए आवश्यक शर्तें-

(i) न्यूनतम 6 व अधिकतम 20 कमरों की अनुमति।

(ii) होम स्टे आवास क्षेत्र में 23 से अधिक कमरों की अनुमति नहीं।

(iii) पेइंग गेस्ट हाउस का क्षेत्र = 167 वर्ग कि.मी.

(iv) पेइंग गेस्ट हाउस के सामने न्यूनतम 30 फीट रोड।

(v) एक से अधिक मालिकों/ स्वामित्व वाले फ्लैट को शामिल

नहीं किया जायेगा।

(vii) fire NOC व Food licence अनिवार्य।

(viii) गेस्ट हाउस योजना (होम स्टे) -

- शुरुआत - 16 अप्रैल, 2021

(ix) राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना, 2022 :-

- ग्रामीण क्षेत्रों मे पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु।
- 30 नवम्बर, 2022 को लागू।
- 25 लाख ₹ तक का ऋण 9% ब्याज सब्सिडी
- न्यूनतम ₹ 1 करोड़ निवेश करने वाली ग्रामीण पर्यटन इकाईयों को 10 वर्ष SGST का 100% पुनर्भरण।

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

पर्यटन संबंधित प्रमुख केन्द्र

- टूरिज्म कन्वेशन सेन्टर, जोधपुर (राजस्थान का प्रथम)
- इंस्टीट्यूट ऑफ हेरिटेज कन्जर्वेशन, (विरासत संरक्षण संस्थान), जयपुर
- CETT (सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस फॉर टूरिज्म ट्रेनिंग) - 2016 उदयपुर
  - सहयोग - सिंगापुर

- राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का लगभग 5.6 प्रतिशत योगदान है। (बजट 2024-25 के अनुसार)
- बजट 2020-21 में 'पर्यटन विकास कोष' के लिए 500 करोड़ की घोषणा की। जिसे बजट 2023-24 में बढ़ाकर 1500 करोड़ कर दिया।
- ढोला मारु टूरिज्म काम्पलेक्स – जैसलमेर में स्थापित किया जायेगा।
- बेस्ट ट्यूरिज्म वीलेज, 2024 - देवमाली (ब्यावर)

Springboard Academy

यूनेस्को – भू- पार्क / Geo-Park , विश्व विरासत स्थल / Geo heritage site

- ✔ यूनेस्को
- ✔ भू-पार्क एवं भू-धरोहर स्थल संकल्पना
- ✔ राजस्थान में सम्भावनाएँ
- ✔ निष्कर्ष

A. यूनेस्को–

(United Nations Educational, Scientific Cultural Organization)

(संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन)

- स्थापना- 16 Nov. 1945 (लन्दन, ब्रिटेन)
- मुख्यालय - पेरिस फ्रांस
- भारत यूनेस्को का सदस्य "1946" में बना।

B. भू-पार्क एवं भू- धरोहर स्थल संकल्पना–

↳ यूनेस्को की जियोपार्क एवं जियो हेरिटेज साईट संकल्पना निम्नलिखित है-

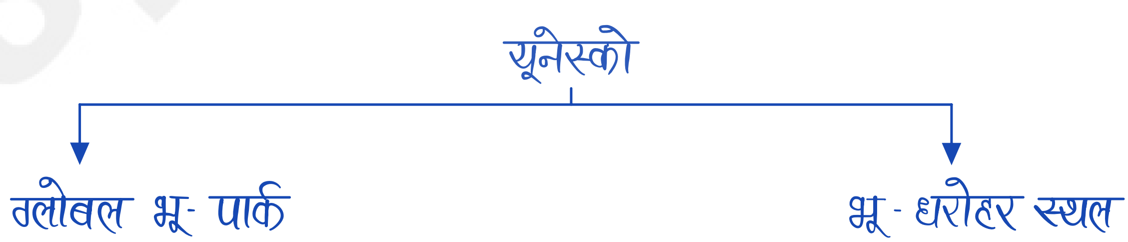

Springboard ACADEMY

(a) <u>ग्लोबल भू- पार्क-</u> (Geo Park)

→ जियो पार्क क्या है?

- यूनेस्को द्वारा "भू-पार्क" अवधारणा २००१ में दी गई।

- एकल एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र है, जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय भू- वैज्ञानिक महत्व के स्थलों एवं परिदृश्यों का सुरक्षा, शिक्षा एवं सतत् विकास की समग्र अवधारणा के साथ यूनेस्को द्वारा प्रबन्धन किया जाता है।

- Bottom to up दृष्टिकोण के तहत इन स्थलों के "सतत् विकास एवं संरक्षण" में स्थानीय समुदायों (भू-मालिकों, समुदायिक समूहों एवं पर्यटन सेवा प्रदाताओं) को शामिल किया जाता है।

<u>वर्तमान में जियो पार्क-</u>

- वर्तमान तक यूनेस्को द्वारा 50 देशों के २२१ क्षेत्रों को 'ग्लोबल जियो पार्क' का दर्जा दिया गया है।

  → वर्तमान में भारत में प्रस्तावित प्रथम जियो पार्क 'लम्हेटा घाट' जो मध्यप्रदेश में स्थापित किया जायेगा यह स्थल डायनासोर के जीवाश्म एवं प्राचीन चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है।

क्या जियो पार्क पद स्थायी है?

→ यूनेस्को द्वारा किसी स्थल को 'ग्लोबल जियो-पार्क' का दर्जा 4 साल के लिए दिया जाता है।

→ जियो पार्क के क्रियाकलाप व गुणवत्ता का 4 साल के बाद पुनर्मुल्यांकन किया जाता है।

→ यूनेस्को ग्लोबल जियो पार्क की गुणवत्ता का आंकलन करने के लिए २ मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा एक फील्ड मिशन चलाया जाता है।

→ इस मिशन के बाद मूल्यांकनकर्ता ग्लोबल जियोपार्क पर एक 'प्रगति रिपोर्ट' तैयार करता है, जिसके आधार पर कार्ड जारी करता है, जिसमें –

Springboard Academy

हरा कार्ड	पीला कार्ड	लाल कार्ड
(मानदण्डों को पूरा करने पर पुनः 4 साल के लिए जियो पार्क सूची में शामिल)	(मानदण्डों को पूरा नहीं करता है तो उचित कदम उठाने के लिए सूचित किया जायेगा)	पीले कार्ड के बाद यदि २ वर्ष में मानदण्डों को पूरा नहीं करता तो, वह स्थल 'जियो-पार्क' का दर्जा खो देगा।

- यूनेस्को जियो पार्क की चार मूलभूत विशेषताएँ है–

i.) वैश्विक स्तर का भू-वैज्ञानिक विरासत स्थल- किसी क्षेत्र को भू-पार्क बनाने के लिए आवश्यक है कि वह स्थल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भू-वैज्ञानिक महत्व का स्थल हो।

ii) प्रबन्धन- जियो पार्क प्रबन्धन का कार्य स्थानीय वैधानिक संगठन के द्वारा किया जायेगा।

iii) दृश्यता- जियो पर्यटन के द्वारा सतत् पोषणीय स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ाना।

iv) नेटवर्क- प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थलों की सूचनाओं का स्थानीय स्तर के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर आदान प्रदान करना।

6. जियो हेरिटेज साइट –

- यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल संकल्पना को 1972 में अपनाया गया।

- इस संकल्पना के तहत यूनेस्को प्राकृतिक, सांस्कृतिक स्थल एवं अमूर्त कलाओं के संरक्षण को बढ़ावा देता है।

- वर्तमान में भारत के 43 स्थल यूनेस्को " भू- विरासत स्थल " में शामिल है।
  जिसमें राजस्थान के शामिल –

सांस्कृतिक धरोहर	प्राकृतिक धरोहर	अमूर्त कला
जन्तर- मन्तर (2010)	केवलादेव - भरतपुर (1985)	कालबेलिया नृत्य (2010)

- 6 दुर्ग (2013) → 1. आमेर (जयपुर)
  2. गागरोन (झालावाड़)
  3. सोनार (जैसलमेर)
  4. रणथम्भौर (स. माधोपुर)
  5. चित्तौड़गढ़
  6. कुंभलगढ़ (राजसमंद)

- जयपुर परकोटा - 2019

राजस्थान में सम्भावनाएँ-

- भारतीय भू- वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग / Geological Survey of India (GSI- 1851, कोलकाता) द्वारा राजस्थान की 12 स्थलों को जियो हेरिटेज साइट घोषित किया गया है।

1. जावर	उदयपुर
2. स्ट्रोमेटोलाईट (नील हरित शैवाल द्वारा निर्मित चट्टानें)	झामर कोटड़ा (उदयपुर)
3. स्ट्रोमेटोलाईट	भोजुण्डा (चित्तौड़)
4. ग्रेट बाउण्ड्री फॉल्ट	सातूर (बूंदी)
5. रामगढ़ उल्कापिण्ड क्रेटर	रामगढ़ (बारां)
6. जोधपुर मालानी ग्रुप आग्नेय चट्टानें	जोधपुर
7. वेल्डेड टफ	जोधपुर
8. सेंदड़ा ग्रेनाईट	पाली
9. बर कांग्लोमेरेट (अवसादी चट्टानें)	पाली
10. आकल वुड फॉसिल पार्क (जुरासिक काल की लकड़ी के अवशेष)	जैसलमेर
11. गोसाण राजपुरा दरिबा	राजसमंद
12. नेफेलाइन साइनाइट	किशनगढ़

निष्कर्ष-

यूनेस्को एवं स्थानीय समुदाय के सहयोग से प्राकृतिक सांस्कृतिक स्थलों एवं अमूर्त कलाओं को संरक्षण देना एवं आर्थिक विकास व पर्यटन की सम्भावनाओं को बढ़ाना।

INTACH-

(Indian National trust for Art & Cultural Heritage)

- स्थापना - 27 जनवरी, 1984 (नई दिल्ली)
- उद्देश्य - विरासत संरक्षण एवं जागरूकता को बढ़ावा देना।